अदृश्य संघर्ष

गुप्त बातों को उजागर करने वाले तीन संदेश...

समाज का विघटन...

युद्ध और अशान्ति, अपराध और हत्या, भूख और गरीबी, चक्रवात (तूफान), सुनामी, बाढ़, भूकम्प.....अब ये नई बातें नहीं रहीं !

इसके साथ ही आज की पीढ़ी नई और मुश्किल चुनौतियों, वातावरण सम्बंधी समस्याओं आनुवांशिक गुणों को बदलने की कोशिशों, मौसम परिवर्तन और खान-पान से जुड़ी महामारियों का सामना कर रही है। हम में से अनेक लोग इस बात से सहमत होंगे कि हमारा समाज अनेक नैतिक मूल्यों से दूर होता जा रहा है।

अनेक लोग तुच्छ और निशक्त बना दिये गये हैं। परन्तु क्या हम प्रश्न न करें :

यह सब क्यों हो रहा है ?

इस बदलाव के पीछे एक कारण है। अच्छी ख़बर यह है कि इसका समाधान भी है।

हम उन समाधानों की बात नहीं कर रहे हैं जो आज-कल के राजनैतिक और धार्मिक नेताओं द्वारा सुझाए जा रहे हैं। इतिहास साक्षी है कि बहुमत प्रायः गलत ही रहा है, और शान्ति-संधियों, सहयोग- समझौतों और भले उद्देश्यों पर आधारित योजनाओं के बावजूद शक्ति के लिये भूख और लालसा जो मनुष्य के दिल में है, वह समाप्त नहीं होगी। जिस प्रकार राष्ट्र राजनैतिक, सैनिक और आर्थिक स्तरों पर एकीकृत हो रहे हैं, ठीक वैसा ही हम धर्म के साथ भी होता हुआ देख रहे हैं।

यह युद्ध अच्छाई और बुराई के बीच चल रहा है, किन्तु इसका अन्त होगा।

हमारी अस्त व्यस्त वास्तविकता के पीछे एक योजना है जिसको अंजाम दिया जा रहा है।

भविष्य में क्या होने वाला है?

पुस्तकों की पुस्तक बाइबल के पास वर्तमान दशा जिस में हम रह रहे हैं । यह खास तौर पर आपसे बात करती है, जो इन बातों का अर्थ खोज रहे हैं और जानना चाहते हैं कि भविष्य में क्या होगा।

आज तक बाइबल की नबूबतें कभी नहीं चूकी हैं। इस लिए हम विश्वास करते हैं कि अन्तिम समय की नबूबतें भी पूरी होंगी।

बाइबल की अन्तिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में हम नबूबतों की एक श्रृंखला पाते हैं जो हमें इतिहास, हमारे समय और निकट भविष्य के विषय बताती है। वहां पर हम तीन पूर्णतया विशेष संदेशों को भी पाते हैं, जो आज के दौर से बहुत वास्ता रखते हैं, और हमें इन संदे'ाों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

ये चेतावनी और अनुग्रह के संदेश ?

ये संदेश प्रकाशितवाक्य 14:6-12 और प्रकाशितवाक्य 18:4 में पाये जाते हैं। हमें इन विशेष संदेशों पर ध्यान देना चाहिये जो हमारे समय से सम्बन्ध रखते हैं! हम इन्हें निकटता से देखेंगे। ये रहे वे सन्देश !

पहला संदेश

''फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों की हर एक जाति, और कुल और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। उसने बड़े शब्द से कहा, ''परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है, और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।''

प्रकाशितवाक्य 14:6-7

यह कहता है कि ये तीन संदेश तीन स्वर्गदूतों द्वारा दिये गये हैं। यूनानी भाषा में ''स्वर्गदूत'' का अर्थ ''ऐंगलोन'' या **संदेशवाहक** होता है। इस प्रकार तीन स्वर्गदूत उन स्त्री और पुरूषों के प्रतीक हैं, जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप कार्य करते हुए अपनी पूरी सामर्थ के साथ यह संदेश 'सनातन' सुसमाचार पूरे संसार को देंगे।

सनातन सुसमाचार

''सनातन सुमसाचार'' क्या है? इसका संक्षिप्त वर्णन आप बाइबल में पाते हैं। यूहन्ना रचित सुमाचार 3 अध्याय 16 पद में बाइबल कहती है:

''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)

हम बाइबल में आदम और हव्वा की कहानी को पाते हैं, जो अनाज्ञाकारी थे, और उन्होंने मना किये हुए फल को खा लिया, जबकि चेतावनी दी गयी थी, और वे जानते थे कि वे मर जायेंगे। इस साधारण सी कहानी के पीछे एक त्रासदी छिपी हुई है, जिसने पूरी मानवता को प्रभावित किया है। बाइबल बताती है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23) और यह मृत्यु सनातन मृत्यु है। परमेश्वर, हमारा सृष्टिकर्ता, जीवन का स्रोत है। हमारे आदि माता-पिता आदम-हव्वा ने परमेवश्वर की चेतावनी का अनादर करने के द्वारा, परमेश्वर को जो जीवन है, छोड़ दिया।

किन्तु परमेश्वर मनुष्य से प्रेम रखता है। उस (परमेश्वर) ने मृत्यु का दण्ड अपने ऊपर लेने का निर्णय किया। उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा, जो हमारे एवज में पीड़ा सहने के लिए तैयार था। यद्यपि यीशु परमेश्वर था, वह एक मनुष्य बन कर आया। (यूहन्ना 1:1-3+14, और फिलिप्पियों 2:5-8)।

एक मानव के रूप में वह हमारे समान प्रत्येक बात में परखा गया। चूंकि उसे हमारा स्थान लेना था अतः पूर्णतया पाप रहित और धार्मिकता का जीवन जीने के द्वारा ही वह हमारे दण्ड को स्वयं दोष रहित होने की दषा

में ही अपने ऊपर ले सकता था। मसीह ने परमेश्वर की सामर्थ से प्रत्येक परीक्षा पर जय पायी है (इब्रानियों 2:17-18)।

केवल उसी ने ऐसा किया है (रोमियों 3:23) और अन्त में उसने क्रूस पर अपना जीवन इसलिये दे दिया कि आप और मैं अनन्त मृत्यु से छुड़ाए जायें। क्योंकि बाइबल यह कहती है :-

''और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं, क्योंकि बिना लोहू बहाये क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)।

इस प्रकार यह आप और मुझ पर निर्भर है कि हम मसीह के प्रस्ताव को विश्वास से स्वीकार करें, यदि आप अपने पापों को मान लें तो आप मसीह के पास आकर अपने पापों से छुटकारा पा सकते हैं। बाबइबल कहती है :–

''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1 :9)।

हममें से प्रत्येक, जो इस धार्मिकता को विश्वास से स्वीकार करता है, वह उद्धार पायेगा। क्या यह शुभ समाचार नहीं है?

परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो

लेकिन यीशु को 'हाँ' कहने से ही जीवन रूक नहीं जाता। तब तो हमारा जीवन मसीह के साथ आरम्भ होता है। तब हमारे जीवन से लगेगा कि हम बदल गये हैं, बाईबल कहती है कि हमारी बुद्धि के नए हो जाने से हमारा चाल चलन भी बदलता जाये (रोमियों 12 :2)। यह तब होता है जब हम यीशु को 'हाँ' कहते और पवित्र आत्मा हमारे दिल में प्रवेश करता है। फिर हम पवित्र आत्मा की सहायता से वह करते हैं जो परमेश्वर हमसे कहता है। अपनी मनमानी करने के बजाय फिर हमारे जीवन में घृणा, क्रोध और कामवासना के स्थान पर प्रेम, प्रसन्नता, शान्ति, भलाई और मित्र भावना जैसे सदगुण उभर आते हैं...(गलातियों 5 :16–26)।

यह हम स्वयं से तो नहीं, परन्तु परमेश्वर की मद्द से अवश्य कर सकते हैं। इस प्रकार परमेश्वर की महिमा करने का अर्थ हमारे अपने जीवन से परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करना और इस प्रकार परमेश्वर को अपने इर्द–गिर्द के लोगों पर प्रकट करना है। यीशु ने हमें एक नमूना दे दिया है और अब यह हम पर निर्भर है कि अपने जीवनों से उसके चरित्र को प्रकट करते हुए उसकी सेवकाई को निरन्तर बनाए रखें (1 पतरस 2 :21 और इफिसियों 3 :10)। मसीह के साथ जीना और उसके चरित्र को प्रकट करने में अनके बातें शामिल हैं। यीशु इसे इस प्रकार कहता है :–

''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इंकार करे और अपना क्रूस उठाये, और मेरे पीछे चले'' और ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।'' (मत्ती 16 :24 और यूहन्ना 14 :15)

यीशु को विश्वास से स्वीकार करने वाला व्यक्ति उसकी आज्ञाओं का पालन करने में आनन्दित होगा। परमेश्वर की आज्ञाएं परमेश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व करती हैं, और परमेश्वर ने ये दस आज्ञाएं हमें इसलिए दी हैं कि हम यह जान सकें कि हमें परमेश्वर के साथ तथा दूसरे मनुष्यों के साथ कैसे व्यवहार करना है। यूहन्ना के पहले पत्र में बाइबल हमारी परीक्षा इस प्रकार करती है :–

''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गये हैं। जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूँ और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं, पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सच मुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है। हमें इसी से मालमू होता है कि हम उस में हैं। जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।'' (1 यूहन्ना 2:3-6)

इस प्रकार परमेश्वर से डरने का अर्थ उस की आज्ञाओं का पालन करना है।

जब हम यह समझेंगे कि हमें बचाने के लिए परमेश्वर ने कितना बड़ा बलिदान दिया है तो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना आनन्दमय हो जायेगा। फिर आज्ञा पालन व्यवस्था के आधीन दासता नहीं किन्तु परमेश्वर के प्रेम के प्रति प्रेम और कृतज्ञता प्रकट करने का साधन बन जायेगा।

यीशु ने स्वर्ग जाते समय अपने चेलों से कहा

''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे'' (प्रेरितों के काम 1:8)।

वही सामर्थ हमारे लिए भी उपलब्ध है। जिस प्रकार यीशु ने स्वर्ग से सामर्थ पाकर पाप पर जय प्राप्त की, हम भी स्वर्ग से सामर्थ पाकर सामने आने वाली प्रत्येक परीक्षा पर जय पा सकते हैं (यूहन्ना 5:30 और 1 कुरिन्थियों 10:13)। मसीह को मानने वाला केवल उसके वचन को ही नहीं सुनेगा परन्तु उसका पालन भी करेगा। सच्चा विश्वास भले कार्यों द्वारा प्रकट होगा। जीवन और उसके कार्य परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होंगे (यूहन्ना 1:22, 2:14-26 और 1 यूहन्ना 2:29)।

बाइबल स्पष्ट कहती है कि पवित्र आत्मा उन्हें दिया जायेगा जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं (प्रेरितों के काम 5:32)। पाप न करने की सामर्थ भी पवित्र आत्मा ही देता है। बाइबल हमसे प्रतिज्ञा करती है:

''जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है'' (1यूहन्ना 3:9 और 2 पतरस 1:4)।

जब हम इस प्रतिज्ञा पर विश्वास करते हैं, हम पायेंगे कि प्रत्येक आजमाइश जिसका हम सामना करेंगे उस पर जय पाने के लिए हमें सामर्थ दी जायेगी। हम आशा करते हैं कि आप मानवीय और स्वर्गीय शक्तियों की संधि का अनुभव करेंगे। क्योंकि अपने जीवन के विभिन्न कार्यों द्वारा परमेश्वर को आदर देने के लिए हम सब को यह करना चाहिये।

''लेकिन'' आप कहेंगे, ''यदि मैं परमेश्वर की सहायता को भूल कर परीक्षा में गिर जाऊँ तो?'' तो हम परमेश्वर की सहायता को भूले हैं न कि परमेश्वर हमको भूला है। फिर हमें पुनः यीशु के साथ जुड़ जाना है, वह हमें खुशी से स्वीकार करेगा और प्रत्येक पश्चातापी व्यक्ति को क्षमा करेगा। पवित्र आत्मा हमारे पापों को स्वीकार करने, पश्चाताप करने और क्षमा याचना कर क्षमा प्राप्त करनें में हमारी मद्द करेगा। जैसा कि बाईबल भी कहती है :–

''हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी'' (1 यूहन्ना 2:1–2)।

जो स्वयं को पूरी रीति से खोया हुआ अनुभव करते हैं, उनके लिए यह प्रोत्साहन के शब्द रहे हैं। यदि आप उनमें से एक हैं तो आप को जानना चाहिये कि यीशु आप को स्वीकार करने के लिऐ सदैव तैयार है। किन्तु उद्धार पाने का कोई और माध्यम नहीं है। हमें उद्धार पाने के लिए यीशु से ही होकर जाना पड़ेगा। इसलिए यीशु कहता है–

''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता''(यूहन्ना 14:6)।

इस प्रकार, ''सनातन सुसमाचार'' का प्रचार करने और ''परमेश्वर की महिमा करने'' में यीशु को केवल जीवन का उद्धारकर्ता मानना ही शामिल नहीं है किन्तु हम प्रतिदिन का जीवन मसीह के साथ बिताते हुये अपने जीवन से उसके चरित्र को प्रकट करेंगे। जब हम इस प्रकार स्वर्गीय शक्तियों के साथ सहयोग करते हैं तो हम उसके लिए जीवित साक्षी बनने के लिए आवश्यक मद्द प्राप्त करेंगे और जब मसीह शीघ्र ही अपने लोगों को लेने आयेगा तब हम उसके अनुग्रह से उससे मिलने के लिए तैयार पाये जायेंगे। बाइबल हमें परमेश्वर की महिमा –

अपने शरीरों के द्वारा भी करने की प्रेरणा देती है (1 कुरिन्थियों 6:19) में बाइबल कहती है :–

''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो'' (1 कुरिन्थियों 6:19–20)?

क्या यह विचारोत्जेक नहीं है कि हमारी देह की तुलना मन्दिर से की गई है? पुराने नियम में, मन्दिर परमेश्वर के लिए समर्पित हुआ करता था। इसी प्रकार हमें भी अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर देना चाहिए। हमें परमेश्वर द्वारा दी गयी उत्तम देह की सर्वोत्तम देख भाल करना चाहिए। हमें प्राकृतिक व साधारण उपचारों को अपनाना चाहिये, जैसे :– ताजी हवा, धूप, व्यायाम, स्वास्थ्यवर्धक भोजन, साफ–सफाई, पर्याप्त नींद और आराम, संयम, पर्याप्त स्वच्छ जल और परमेश्वर में भरोसा। तब हमारा जीवन शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप के बेहतर होगा।

अपनी देह की यथा शक्ति उत्तम देखभाल करने से भी हम अपने सृष्टिकर्ता की महिमा कर सकते हैं, जो कि मसीह के सभी चेलों को करना भी चाहिए। अब हम इस पहले संदेश के दूसरे भाग को देखेंगे जिसका आज ऊँची आवाज़ से प्रचार किया जाना चाहिए।

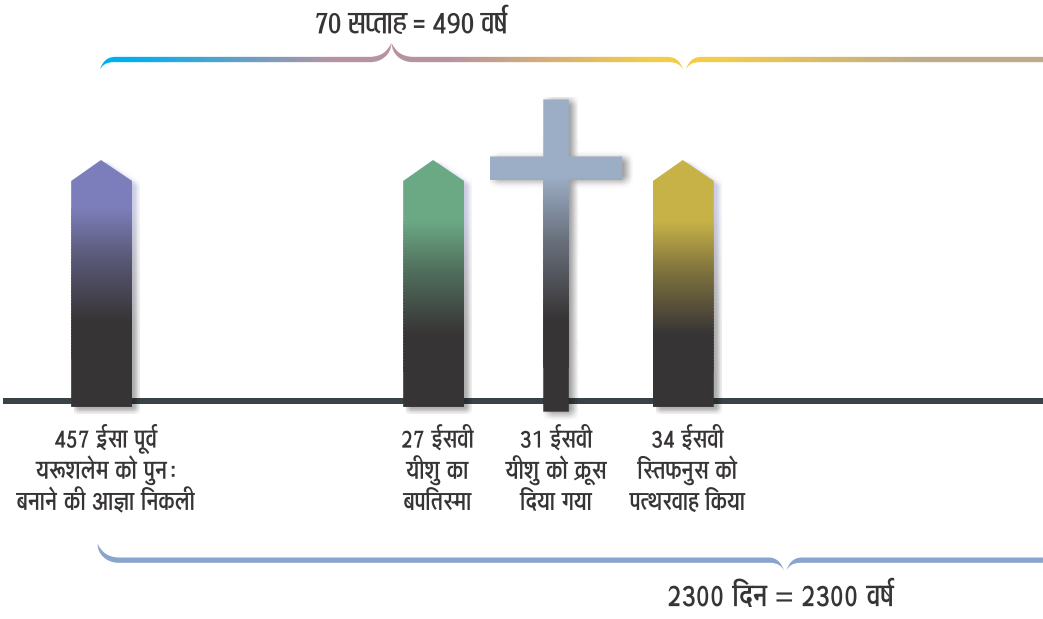

उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है

बाईबल बताती है कि यीशु मसीह के पुनः आगमन से पहले ही यह फैसला हो चुका होगा कि कौन बचेगा और कौन नाश होगा। वास्तव में यह हम ही तय करेंगे कि हम किस समूह में होंगे। बाइबल बताती है कि अभी यीशु मसीह स्वर्गीय पवित्रस्थान में महायाजक है। वह हमारे लिए परमेश्वर के सामने बिचवई की प्रार्थना करता है। स्वर्ग में हमारे लिए सेवकाई को समझने के लिए हमें एक नमूना दिया गया है जिसका हम अध्ययन कर सकते हैं। पृथ्वी का पवित्रस्थान जिसका वर्णन हम पुराने नियम में पाते हैं। पौलुस इसे ''स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब'' (इब्रानियों 8:5) कहता है। यह स्वर्गीय पवित्रस्थान का एक छोटा नमूना था, आप इस के विषय में इब्रानियों 8 और 9 अध्याय में पढ़ सकते हैं।

पृथ्वी के पवित्रस्थान के पहले भाग में पुरोहित (याजक) प्रतिदिन सेवा किया करता था। इस भाग को ''पवित्रस्थान'' कहा जाता था। (लैव्य. 4 अध्याय)।

वर्ष में एक बार, प्रायश्चित के महान दिन महायाजक पवित्रस्थान के दूसरे भाग ''महापवित्र स्थान'' में प्रवेश किया करता था (इब्रानियों 9:7)। पुराने नियम के पवित्रस्थान की सेवकाई में, लोग प्रतीकात्मक रूप से अपने पापों को (बलिदान किये गये पशु के लहू द्वारा) पवित्रस्थान में स्थानांतरित कर देते थे। इस महत्वपूर्ण दिन, जिसे प्रायश्चित का दिन कहा जाता है, उस दिन पवित्र स्थान को प्रतीकात्मक रूप से पूरे वर्ष भर जमा हुए पापों से शुद्ध किया जाता था। यह न्याय का दिन कहलाता था। (लैव्य. अध्याय 4 और 16 पढ़ें)। पवित्र स्थान जब प्रतीकात्मक रूप से पाप से शुद्ध हो जाता था और उसके बाद ही वे अपना अगला पवित्र पर्व ''झोपडियों'' का पर्व मनाते थे। झोपड़ियों का पर्व आनन्द और धन्यवाद का पर्व होता था।

चूंकि पुराने नियम के पवित्रस्थान की सेवकाई प्रभु यीशु मसीह की स्वर्गीय पवित्रस्थान में बाद में की जाने वाली सेवकाई का प्रतीक थी, इससे स्पष्ट है कि ''आनन्द पर्व'' से पूर्व न्याय का एक दिन भी होगा, जब यीशु अपने लोगों को एकत्र करेगा।

दानिय्येल नबी हमें स्वर्गीय पवित्र स्थान के इस न्याय के दिन– इस ''शुद्ध करने'' या धर्मी ठहराये जाने के विषय बताता है।

दानिय्येल 8:14 में बाईबल बताती है कि न्याय का काल पहले ही आरम्भ हो चुका है।

1844 ईसवी

?

1844 ईसवी
स्वर्ग में न्याय
आरम्भ होता है

न्याय का
समय आ
पहुँचा है

यीशु पुनः
आ जायेगा

यह हमारे शीर्षक– ''उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है'' से सहमत है। यह विशेष समय कब आयेगा? दानिय्येल ने बताया गया था कि 2300 दिन बीतने के बाद यह न्याय आरम्भ होगा।

भविष्यवाणी में एक दिन बराबर एक वर्ष (यहेजकेल 4:6), इसलिए हम 2300 वर्ष के लम्बे समय के विषय बात करते हैं।

(दानियेल 9:25 पढ़ें) हम इस भविष्यवाणी काल के आरम्भ होने के समय के विषय पाते हैं और इतिहास बताता है इस भविष्यवाणी के आरम्भ होने की घटना वर्ष 457 ईसा पूर्व के शरद ऋतु में घटी।

यदि हम (शून्य वर्ष रहित) 2300 वर्ष की गणना करें तो हम 1844 के मध्य तक पहुँचते हैं। भविष्यवाणी के अनुसार यह वही समय है जब कि ''प्रायश्चित के महान दिन'' की स्वर्ग में शुरूआत होनी थी।

बाइबल कहती है कि न्याय की शुरूआत परमेश्वर की सन्तानों से होगी (1 पतरस 4:17)। उनके नाम की जांच-परख होगी और उनके जीवनों को परमेश्वर की व्यवस्था के दर्पण में देखा जायेगा जो पवित्र स्थान के दूसरे भाग ''**महापवित्र स्थान**'' में सुरक्षित रखी है (इब्रानियों 9:3-4)।

पुराने नियम के समय में प्रायश्चित का दिन आने से पहिले ही सब पापों को स्वीकार करना और निपटाना आवश्यक था, ताकि उनके लिए प्रायश्चित किया जा सके।

इस प्रकार हमें अपने सब पापों को परमेश्वर के समक्ष रख देना चाहिये ताकि यीशु हमारे पापों के लिए प्रायश्चित कर सके, जब स्वर्ग में न्याय का दिन समाप्त हो जायेगा, हमारे लिए अनुग्रह का दरवाजा भी बन्द हो जायेगा।

यह हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु के वापस आने के ठीक पहले होगा। यीशु का लहू केवल उन्हीं पापों को धो सकेगा जिनके लिए प्रार्थना की गई है और उन्हें मान कर पश्चाताप किया जा चुका है। और जिनके लिए यीशु मसीह के द्वारा क्षमा प्राप्त की जा चुकी है। शेष सब लोग नाश हो जायेंगे। यद्यपि यीशु ने उन्हें क्षमा करने की पेशकश भी की, फिर भी उन्होंने उद्धार के उपहार को स्वीकार नहीं किया। एक दिन बहुत देर हो चुकी होगी और परमेश्वर भी इसके लिए दुखी होगा, लेकिन न्याय की मांग यही होगी कि उनका न्याय उनके कार्यों के अनुसार किया जाये। बाइबल कहती है कि वे आग और गन्धक से नाश किए जायेंगे (प्रकाशिवाक्य 20:12 और 21:8)।

अभी यीशु स्वर्ग में है (यहून्ना 14:1-3 और प्रेरितों के काम 1:8-11) यीशु छुड़ाने वाला और उद्धारकर्ता है,

यीशु ही तय करेगा कि कौन नाश होगा और कौन उद्धार पायेगा। इसलिए हम जानते हैं कि न्याय निष्पक्ष होगा। इस न्याय में धर्मी ठहरने का एक मात्र मार्ग है कि हम अपने पाप यीशु पर डाल दें। कोई नहीं जानता कि यीशु अपनी महायाजकीय सेवकाई और पवित्र स्थान में न्याय प्रक्रिया को कब समाप्त करेगा, इसलिये हमारे पास नष्ट करने के लिए समय नहीं है। अनुग्रह का समय अभी है। यह अभी है जब परमेश्वर आपको नम्र होने और अपने पाप यीशु के कदमों के पास रखने के लिए बुला रहा है।

''और जो कोई मेरे पास आयेगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा'' यीशु कहता है। (यूहन्ना 6:37)

आप अभी उसके पास आ सकते हैं। वह आपको स्वीकार करेगा और अपनी शान्ति देगा, वह शान्ति जो संसार नहीं दे सकता है (यूहन्ना 6:37)। क्या आप उसकी पेशकश को स्वीकार करेंगे? यह आप पर निर्भर है, लेकिन आप को यह जान लेना चाहिए कि आप यीशु की पेशकश को स्वीकार करेंगे तो आपको कभी पछतावा नहीं होगा। बाइबल के इन शब्दों को याद रखें :

''सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे'' (यूहन्ना 8:36)। और ''जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है'' (2 कुरिन्थियों 3:17)।

आइये आगे को हम शैतान के दास और अपने जीवन में पाप के बोझ के नीचे न रहें। किन्तु परमेश्वर की सहायता से स्वयं को अलग करके आजाद हो जायें, फिर हम मृत्यु से पार हो कर जीवन में पहुँच जायेंगे। आइये यह फैसला अभी करें जब कि अनुग्रह का द्वार खुला हुआ है। (इसके विषय अधिक जानने के लिऐ ''द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी'' पुस्तक पढ़े।)

पहले संदेश का अंतिम भाग जिसकी घोषणा अब ऊँचे शब्द से की जायेगी, कहता है :

...उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है...

उसकी उपासना करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया (उत्पत्ति 2:1–3)। यह अच्छी बात है कि अनेक वैज्ञानिक भी इस बात पर विश्वास करते हैं। निर्गमन 20:8–11 में चौथी आज्ञा में विश्राम दिन की आज्ञा पायी जाती है यहीं पर सृष्टिकर्ता की उपासना करने का आवाहन भी पाते हैं। विश्राम का दिन जिसे बाइबल सब्बत दिन कहती है, अलग रखा गया है कि हम विशेष रीति से अपने सृष्टिकर्ता की आराधना करने, उसकी महिमा करने और उसे जानने के लिए समय बिता सकें। हम परमेश्वर को उसके वचन के अध्ययन और उसकी सृष्टि का अध्ययन करने से जान सकते हैं। यद्यपि प्रकृति अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है, फिर भी देखने के लिए हमारे आस–पास काफी सुन्दरता बाकी है। जितना अधिक हम परमेश्वर की सृष्टि के विषय में जानेंगे, उतना ही अधिक हम सृष्टिकर्ता की प्रशंसा करेंगे।

...इसकी उपासना करो जो सृष्टिकर्ता है...

निश्चय ही प्रकृति में इतनी अधिक सुन्दरता बची है जो किसी का मन मोह सकती है। एक फूल, एक छोटा कीट, एक कुत्ता या एक मनुष्य पर ध्यान दीजिए। सब कुछ इतनी अच्छी तरह और उचित रीति से बनाया गया है।

यह दुख की बात है कि कुछ लोग इस बात पर संदेह करने लगे हैं कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। उन्नीसवी सदी में चार्ल्स डार्विन ने 'जीवन की उत्पत्ति' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। दुर्भाग्य से बहुत से लोग इस मनुष्य निर्मित मानव विकास की शिक्षा के शिकार हो चुके हैं, जो निरन्तर पुस्तकों में और शिक्षा के दूसरे साधनों में स्कूल और विश्वविद्यालयों में बरकरार है। आइए हम जीवन की उत्पत्ति पर मनुष्य और मनुष्य निर्मित सिद्धांतों को प्राथमिकता न देकर सृष्टिकर्ता को ऊँचा उठायें और उसी की उपासना करें जिसने छः दिन में सृष्टि रचना के बाद सातवें दिन लगभग 6000 वर्ष पूर्व विश्राम किया, आशीष दी और पवित्र ठहराया।

उसने यह सब हमारे लिए कितनी अद्भुत सुन्दरता से बनाया है। यदि आप को अभी भी परमेश्वर के सृष्टिकर्ता होने पर संदेह है, एक पूरे दिन के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीजिए और समझिये कि सब गति-विधियों के लिए आपकी दृष्टि कितनी आवश्यक है। इस तरह हमारे सभी अंग भली प्रकार कार्य करने हेतु बनाये गये हैं। हम परमेश्वर/यीशु मसीह का जीवन के लिए धन्यवाद करें। बाइबल इसे इस प्रकार कहती है :

''और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं'' (कुलुस्सियों 1:17, यूहन्ना 1:1-3+14 और उत्पत्ति 1:26)।

यदि प्रत्येक जन परमेश्वर के पवित्र दिन पर उसकी महिमा करने में समय बिताता तो आज कोई भी व्यक्ति नास्तिक और जीव उत्पत्ति का सिद्धांतवादी नहीं होता। परमेश्वर ने उन लोगों के लिए बड़ी आशीषें रखी हैं, जो आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की उपासना करते हैं।

दूसरा संदेश

''फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है'' (प्रकाशितवाक्य 14:8)।

गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा

वह ''**बाबुल**'' ''**बड़ा बाबुल**'' और ''**वेश्या**'' कौन है?

प्रकाशितवाक्य 17 में ''वेश्या'' का वर्णन है, उसके अनेक गुण दिये हैं, जिससे उसे पहचानने में आसानी होगी। पहली बार आप इसे सुनते हैं, तो यह कठोर प्रतीत हो सकता है, लेकिन सत्य यह है कि बाइबल में बताये गये ''वेश्या'' के सभी पहचान चिन्ह रोमन कैथोलिक चर्च पर सही ठहरते हैं। निश्चय ही इस चर्च में अनेक ईमानदार लोग हैं और उन्हें नीचा दिखाने का हमारा कोई इरादा नहीं है, लेकिन हम इस बुलाहट को महसूस करते हैं कि उन्हें और दूसरे लोगों को इस 'सिस्टम' के विरूद्ध चेतावनी दें, और उन शिक्षाओं की जानकारी उन्हें करायें जो इस (कैथोलिक) ''सिस्टम'' का आधार हैं, किन्तु परमेश्वर के पवित्र वचन में नहीं पायी जाती हैं। इस चेतावनी के पीछे बाइबल की स्पष्ट आज्ञा है। इस कैथोलिक ''सिस्टम'' की शिक्षाएं धर्मशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा से मेल नहीं खाती हैं और 'वेश्या' के पहचान चिन्ह पूरी तरह से (प्रकाशितवाक्य 17:5) रोमन कैथोलिक चर्च पर सही बैठते हैं।

इनमें से एक चिन्ह है:-

> ''और उसके माथे पर यह नाम लिखा, ''भेद, बड़ा बाबुल, पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता।'' (प्रकाशितवाक्य 17:5)

कैथोलिक चर्च स्वयं को कलीसियाओं की माता बताती है। संसार भर के बिशपों को लिखे एक पत्र में कार्डीनल जोजफ रेटजिन्जर लिखते हैं ''**यह सदैव स्पष्ट रहना ही चाहिए कि एक पवित्र, कैथोलिक और विश्वव्यापी देवदूत संबंधी कलीसिया एक बहन नहीं है किन्तु सब कलीसियाओं की माता है**'' (डेली टेली ग्राफ, 4 सितम्बर 2000)। ऐसी घोषणऐं यह प्रमाणित करने में सहायता करती हैं कि कैथोलिक चर्च ही प्रकाशितवाक्य 17:5 के अनुसार बाबुल है।

दूसरे स्वर्गदूत के संदेश में धार्मिक संसार की भयानक दशा का वर्णन भी मिलता है। बाइबल प्रकट करती है कि ''वेश्या'' या ''बड़ा बाबुल'' अपनी बाइबल विरोधी शिक्षाओं या अपनी मतवाला करने वाली मदिरा से संसार को भरमायेगी।

सबसे बड़ी झूठी शिक्षा कैथोलिक चर्च ने इन वर्षो में फैलाने का कार्य परमेश्वर की दस आज्ञाओं को बदल देने के द्वारा किया है जो निर्गमन 20:3-17 में पायी जाती हैं। दुर्भाग्य से लूथरन कलीसियाओं ने भी इन झूठी शिक्षाओं को स्वीकार कर लिया है और इन झूठी शिक्षाओं से लोगों को भरमाया है। (इसके विषय में चर्चा ''परमेश्वर की मुहर और पशु की छाप'' शीर्षक के अन्तर्गत की जायेगी।)

बाबुल की मतवाला करने वाली मदिरा-

कैथोलिक चर्च या ''वेश्या'' (प्रकाशितवाक्य 17:5) ने और भी अनेक बाइबल विरोधी शिक्षाओं- जैसे कुवांरी मरियम की महिमा, आत्मा की अमरता की शिक्षा जो 'न्यू एज मूवमेंट' और आत्मावाद में पायी जाती हैं, को प्रचारित किया है। आज अनेक कलीसियाएं आत्मावाद की शिक्षा को स्वीकार कर चुकी हैं। आत्माओं की अमरता के सिद्धान्त में विश्वास, भरमाने वाली शिक्षाओं और ऐसी शिक्षाओं के लिए द्वार खोल देता है जो शैतानी शक्तियों की शिक्षाएं हैं। ज्यो-ज्यों हम अन्त के समय की ओर बढ़ेंगे, शैतान का प्रभाव अनेक कलीसियाओं में और भी स्पष्ट दिखाई देगा। (व्यवस्था विवरण 18:10-12, और 2 थिस्सलुनीकियों 2:9)। इस विषय में और अधिक जानने के लिए हमारी पुस्तिका ''मरियम का प्रेत'' अवश्य पढ़ें।

प्रभु भोज

कैथोलिक चर्च सिखाता है कि जब पुरोहित 'रोटी और दाखरस' को ऊपर उठाकर आशीषित करता है तो वह तुरन्त यीशु की असली देह और उसके लहू में बदल जाती है, और इस प्रकार प्रत्येक बार जब-जब प्रभु भोज में रोटी खाते और दाखरस पीते हैं, वे यीशु को प्रत्येक बार बलिदान करते (मारते) हैं। इसीलिए इसे पवित्र मिस्सा बलिदान कहा जाता है। अनके बुरी धर्म पद्धतियों में से यह एक है जो कैथोलिक चर्च में प्रचारित की है, जबकि बाईबल बताती है कि यीशु एक बार बलिदान हुआ है। और प्रभु भोज की रीति इस बात के स्मरण के लिए है कि यीशु ने हमारे उद्धार के लिए क्या किया है (इब्रानियों 9:24-28, और 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

इस बात के संकेत हैं कि विधर्मी प्रोटेस्टेन्जिम भी कैथोलिक ''प्रभु भोज'' की रीति को आनेवाले समय में स्वीकार कर लेगा।

संयुक्त घोषणा पत्र

हमने बहुत संक्षेप में झूठी शिक्षाओं (मतवाला करने वाली दाखरस) का वर्णन किया है जो दूसरी कलीसियाओं में जा मिली हैं। यह दुख की बात है कि 31 अक्टूबर 1999 को कैथोलिक चर्च और लूथरन वर्ल्ड फैडरेशन ने धार्मिकता के सिद्धांत की शिक्षाओं से संबंधित एक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं।

परमेश्वर की दस आज्ञाएं निर्गमन 20:3-17	दस आज्ञाएं जिन्हें मनुष्य ने बदल दिया हैं लूथर कैटाकिज्म से उद्धृत
1. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।	1. मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, मुझे छोड़ किसी अनजान देवता को ईश्वर करने न मानना।
2. तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दंडवत न करना और न उनकी उपासना करना। क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ, और जो मुझसे बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दंड दिया करता हूँ और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करूणा किया करता हूँ।	2. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।
3. तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोश न ठहरायेगा।	3. तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना।
4. तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना, परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम-काज करना और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेसी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया। इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।	4. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
5. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाये।	5. तू खून न करना।
6. तू खून न करना।	6. तू व्यभिचार न करना।
7. तू व्यभिचार न करना।	7. तू चोरी न करना।
8. तू चोरी न करना।	8. तू अपने पड़ोसी के विरूद्ध झूठी गवाही न देना।
9. तू किसी के विरूद्ध झूठी साक्षी न देना।	9. तू अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच न करना।
10. तू किसी के घर का लालच न करना, न तो किसी की स्त्री का लालच करना और न किसी के दास-दासी, वा बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।	10. तू अपने पड़ोसी की किसी वस्तु का लालच न करना।

लूथरन चर्च के अनेक सदस्य तो यह नहीं जानते हैं कि इस घोषणा पत्र में कौन सी बाते हैं, क्योंकि कलीसियाओं के शक्ति समूह ने लोगों के सिर पर चर्च काउंसिल द्वारा यह फैसला थोप दिया है। यह संयुक्त घोषणा पत्र अनेक बातों के साथ यह भी कहता है कि हम एक ही समय में पापी और धार्मिक दोनो होते हैं। जबकि बाइबल कहती है कि जब हमने यीशु की धार्मिकता को स्वीकार कर लिया है तो हम पापी नहीं रहे, किन्तु धार्मिक बन गये हैं (1 यूहन्ना 1:9)।

क्योंकि बाइबल कहती है कोई भी अपवित्र वस्तु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश न करेगी और यीशु इन्सानों को पापों से बचाने आया न कि उन्हें पापों में बचाने आया। (प्रकाशितवाक्य 21:27 और, मत्ती 1:21)

और यदि हम पापी ही रहते तो कोई भी उद्धार नहीं पाता,

धार्मिकता के सिद्धान्त
पर
संयुक्त घोषणा पत्र

लूथन वर्ल्ड फैडरेशन
और
कैथोलिक चर्च

आधिकारिक साझा वक्तव्य : कैथोलिक चर्च और लूथरन फैडरशन

धार्मिकता के सिद्धांत पर संयुक्त घोषणा पत्र में बनी सहमति के आधार पर लूथरन वर्ल्ड फैडरेशन और कैथोलिक चर्च एक साथ घोषणा करते हैं। ''घोषणा में दर्शायी गई धार्मिकता के सिद्धांत की समझ बताती है कि धार्मिकता के सिद्धांत की आधारभूत सच्चाईयों पर लूथरन और कैथोलिक चर्च में आम सहमति पायी जाती है'' (जे.डी.40) लूथरन वर्ल्ड फैडरेशन और कैथोलिक चर्च इस आम सहमति के आधार पर दोनों साथ-साथ घोषणा करते हैं, ''घोषणा में वर्णित लूथरन वर्ल्ड फैडरेशन की शिक्षा 'ट्रेंट काउंसिल' की निंदा के अधीन नहीं आती है। घोषणा में वर्णित रोमन कैथोलिक चर्च की शिक्षा 'लूथरन कन्फेशन' की निंदा के अधीन नहीं आती है।'' (जे.डी.41)

धर्म विधियों द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने की शिक्षा?

''संयुक्त घोषणा'' पत्र यह भी कहता है कि विश्वासी लोग पूरी रीति से धार्मिक हैं, क्योंकि परमेश्वर उन्हें वचन और धर्मविधि द्वारा क्षमा करता है किन्तु हम अपने कार्यों (धर्म विधियों) द्वारा क्षमा प्राप्त नहीं करते और न ही धर्मी बनते हैं। यह कैथोलिक शिक्षा है जो 16वीं सदी में ट्रेन्ट की काउंसिल में स्वीकार की गयी थी। लूथरन लोग इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर अपने विश्वास से क्यों मुकर गये हैं? बपतिस्मा और प्रभु भोज जो इस धर्म विधि का हिस्सा है, प्रतीकात्मक कार्य हैं। हमें यीशु मसीह और अपने आप के बीच में कुछ भी ऐसा नहीं आने देना चाहिए जो हमें उद्धार देने या क्षमा प्रदान करने का दावा करता है। हमें धार्मिकता प्राप्त करने के लिए सीधे प्रभु यीशु मसीह के पास अपने पापों के साथ जाना होता है।

बच्चों के ऊपर पानी के छींटे देना

संयुक्त घोषणा पत्र कहता है कि ''सुनने व विश्वास करने से, मनुष्य बपतिस्मा द्वारा धर्मी ठहराया जाता है।'' हम जानते हैं कि नवजात शिशुओं के सिर पर पानी के छींटे देने से ही कैथोलिक और लूथरन दोनों ही कलीसियाओं में प्रवेश मिलता है। लेकिन एक छोटा बालक अपने आप से विश्वास नहीं कर सकता, और यह भी ठीक नहीं है कि आपके लिए कोई दूसरा विश्वास करे। बाइबल कहती है कि विश्वास परमेश्वर के वचन के प्रचार से आता है और जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उद्धार पायेगा (रोमियों 10:17 और मरकुस 16:16)।

बपतिस्मा परमेश्वर और मनुष्य के बीच में विवेक की एक अच्छी वाचा है (1 पतरस 3:2), परन्तु एक छोटा बच्चा ऐसी वाचा का अर्थ नहीं समझ सकता है। प्रत्येक को पहले सुसमाचार सुनना चाहिए और उसके बाद निर्णय करना चाहिए कि उसे परमेश्वर के साथ विवेक की इस वाचा में बंधना चाहिए या नहीं। इसके अतिरिक्त बाइबल वाला बपतिस्मा पानी में दफन करना है, जहाँ आप प्रतीकात्मक रूप में पुराने पापी जीवन को दफन कर देते हैं और यीशु में एक नए जीवन के साथ जी उठते हैं (रोमियों 6:3-6)।

चार्टा ओइक्यूमेनिका (वैश्विक चर्च एकता का पत्रक)

''संयुक्त घोषणा पत्र'' एक भ्रमित करने वाला दस्तावेज है न कि ''यहोवा यूँ कहता है''। अभी जल्दी ही बड़ी तादाद में लूथरन और कैथोलिक संगठन युरोप में सी.ई.सी. (कांफ्रेंस ऑफ यूरोपियन चर्च) और सी.सी.ई.ई. (कैथोलिक बिशपस् कॉन्फ्रेंस ऑफ यूरोप) एक स्थान पर संयुक्त दस्तावेज तैयार करने के लिए इकत्र हुए,

जिसका नाम वैश्विक चर्च एकता पत्रक है। यह पत्रक, अनेक विषयों पर कैथोलिक चर्च और 1995 के जेस्यूटस की योजना की एक प्रति है (जेस्यूट की आम सभा 1995 से साभार)। इस आम सभा की कार्यवाही का विवरण दिखाता है कि वे कलीसियाओं की सम्पूर्ण एकता के लिए कार्य करेंगे। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह यूनियन रोमन कैथोलिक चर्च के आधीन होगी। वैश्विक चर्च एकता पत्रक में, लगभग वे ही बातें दोहराई गयी हैं। इसमें कहा गया है ''जब तक हम कलीसियाओं की एकता का लक्ष्य पूरी तरह प्राप्त नहीं करलें, तब तक हम सब एक साथ मिलकर सभी विषयों पर कार्य करने के इच्छुक हैं जिनमें हमें एक दूसरे से अलग होकर कार्य करने के लिए विवश करने वाली बातें न हों।'' इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे दूसरी कलीसियाओं से बातचीत करेंगे, कि दूसरी कलीसियाएं उन्हें उनके विश्वास वचनों के बारे में सूचना दे सकें। इसके उपरान्त, वे उन बातों को इकत्र करेंगे, जिन पर आम सहमति बन सकती है, लेकिन असहमति प्रकट करने वाली बातें छोड़ देंगे। किन्तु मसीह का एक सच्चा चेला उन सच्चाईयों को भी लेगा जिन पर सवाल उठते हैं और प्रार्थना में परमेश्वर से सहायता मांगकर, प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर की इच्छानुसार कार्य करेगा। चार्टा ओइक्यूमेनिका ''मसीह शिक्षा में और धर्म विज्ञान प्रशिक्षण में, और उन्नत शिक्षा के विषय में कलीसियाई एकता के विकास'' के लिए कार्य करेगा। हम अपने युवाओं को कैथोलिक प्रेरित कलीसियाई एकता के हानिकारक दुष्प्रभाव से कैसे बचायेगें?

चार्टा ओइक्यूमेनिका प्रार्थना का इस्तेमाल मसीहों को चर्च एकता के झण्डे के नीचे एकत्र करने के लिए भी करेगा। वे इसे इस प्रकार कहते हैं, ''साथ-साथ प्रार्थना करना चर्च एकता का स्वभाव है।'' परमेश्वर से प्रार्थना करना महत्वपूर्ण है, किन्तु हम समझते हैं कि ऐसे प्रार्थना सहयोगी की एकता के पीछे एक विशेष कुटिल रणनीति है। चार्टा ओइक्यूमेनिका यूरोप में ''संगठित प्रचार कार्य को प्रोत्साहन दे रहा है'' और वे प्रचार कार्य दूसरी कलीसियाओं से सदस्य ''चुराने'' के लिए नहीं करेंगे। यदि इस युक्ति को अपनाया जाता है तो स्वतंत्रता से प्रचार करने और लोगों को ''बाबुल'' से बाहर बुलाने की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। हमें इस के खिलाफ पूरी शक्ति से चेतावनी देना चाहिए। चार्टा ओइक्यूमेनिका के साथ धार्मिक स्वतंत्रता खतरे में है। **हम अविश्वासनीय रूप से कठिन समय की ओर बढ़ रहे हैं। यह स्पष्ट है कि वे मसीहियों के बड़े समूहों के पक्षधर हैं और वे कहते हैं कि कलीसियाओं और पंथों में अन्तर होना महत्वपूर्ण है।**

आइए हम पौलुस का साथ दें, जो उनके अनुसार एक पंथ को मानने वाला था (**प्रेरितों के कार्य 24:14**)। **बजाये इसके कि हम इन शक्ति समूहों को कैथोलिक नीतियों के आधार पर हमें चर्च एकता में बांधने की अनुमति दें।** (इस विषय में अधिक जानने के लिए चार्टा ओइक्यूमेनिका नामक पुस्तिका पढ़ें)

चार्टा ओइक्यूमेनिका

यूरोप में क्लीसियाओं के आपसी सहयोग के वास्ते

जिनेवा/
सैंट गैल्लैन
जुलाई 1999

वेश्या की पुत्रियाँ पतित प्रोटेस्टेन्टस

इसमें हम देखते हैं कि लूथरन कलीसियाएं और दूसरी कलीसियाएं कैथोलिक चर्च के साथ सहमति प्रकट करते हुए, संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करती हैं। जो महत्वपूर्ण विषयों पर झूठे सिद्धान्तों को मानती हैं। बाइबल में प्रकाशितवाक्य 17:5 के अनुसार ''वेश्या की पुत्रियां हो गयी हैं।''

पहली बार हम ''बाबुल'' और ''बाबुल के गुम्मट'' शब्दों को उत्पत्ति 10 और 11 अध्यायों मे पाते हैं। निर्मोद एक शासक था और उसी के शासन में बाबुल का गुम्मट बनाया गया। ''बाबुल'' का मूल अर्थ ईश्वरीय प्रभुत्व के खिलाफ विद्रोह माना जाता है। मनुष्य ने नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों मे ले ली, जिस पर केवल पमरेश्वर का अधिकार था। ''बाबुल'' इस प्रकार झूठे धर्मों की माता बन गयी और उनका धर्म यह था कि वे अपने ही कार्यों से उद्धार पायेंगे। अधार्मिकता, सत्ता लोलुपता और भ्रम की स्थिति बन गयी थी। इसीलिए हम ''बाबुल'' को भ्रम या गड़बड़ी से जोड़ते हैं। ''बाबुल'' शब्द का अर्थ भ्रम अर्थात् गड़बड़ी है।

मसीह के समय से 600 वर्ष पूर्व रहे बाबुल शहर में भी धर्मत्याग और गड़बड़ी जैसे गुण पाये जाते थे। इस विश्व शक्ति ने परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार किया, और बाइबल बताती है कि उस समय के लोग :–

> ''बाबुल में से भागो, अपने प्राण बचाओ। उसके अधर्म में भागी होकर तुम भी मिट न जाओ, क्योंकि यह यहोवा के बदला देने का समय है। वह उसको बदला देने पर है।'' और ''हम बाबुल का इलाज करते तो थे, परन्तु वह चंगी नहीं हुई.....''(यिर्मयाह 51:6,9)।

''गिर गया बाबुल गिर गया'' (प्रकाशितवाक्य 14:8) कथन में ''बाबुल'' का प्रयोग प्रतीकात्मक है। यह उन कलीसियाओं को दिखाता है जो कभी सत्य को जानती थीं, किन्तु अब उनका पतन हो चुका है। यह मसीहत में पनप चुकी आत्मिक भ्रष्टता का चित्रण है। परमेश्वर धर्म भ्रष्ट हो चुकी मसीहत पर दोष लगा रहा है और उसे झिड़क रहा है। लूथरन कलीसियाएं प्रथम उदाहरण हैं। मार्टिन लूथर ने अपने समय में पोपीय सत्ता के विरूद्ध एक शक्तिशाली धर्म सुधार आन्दोलन का नेतृत्व किया, किन्तु आज लूथरन चर्च ने रोम के साथ उनके महत्वपूर्ण विषयों पर समझौता कर लिया है। हमने पहले ही अनेक उदाहरण दिये हैं, लेकिन आप शीघ्र ही देखेंगे कि धर्म त्याग विशाल रूप से फैल चुका है।

इस प्रकार बाबुल झूठी 'सभा' का वर्णन है जो इस पृथ्वी के लोगों को भरमायेगी। झूठी बाबुल 'सभा' कैथोलिक चर्च है, क्योंकि इसके पहिचान चिन्ह पुराने बाबुल के पहिचान चिन्हों के समान हैं।

लूथरन कलीसियाएं धीरे-धीरे बाबुल के समान बन गयी हैं और इस प्रकार ''बाबुल'' का एक भाग बन गयी हैं। बाइबल दिखाती है कि कैथोलिक और लूथरन दोनों ही कलीसियाओं का बड़ा पतन होगा.....और उनका भी पतन होगा जो उनके पद चिन्हों पर चल रहे हैं.....निकट भविष्य इस बात को प्रकट कर देगा।

बाबुल के गुणों वाली कलीसियाओं में आत्मिक अंधकार और परमेश्वर से दूरी के बावजूद मसीह के सच्चे अनुयाईयों का एक बड़ा भाग पाया जाता है। उनमें से बहुतों ने हमारे समय की विशेष सच्चाईयों का ज्ञान अभी नहीं पाया है, बहुत हैं जो सन्तुष्ट नहीं हैं और अधिक प्रकाश के अभिलाषी हैं। वे अपनी कलीसियाओं में व्यर्थ ही मसीह के प्रतिरूप की तलाश कर रहे हैं। धीरे-धीरे जब ये कलीसियाएं स्वयं को सत्य से दूर लेकर जायेंगी और स्वयं को संसार के समान बना लेंगी। लोगों को दोनों समूहों में अन्तर स्पष्ट नज़र आने लगेगा। अन्त में पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा। समय आयेगा जब वे लोग जो परमेश्वर को प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रेम करते हैं इन कलीसियाओं के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ लेंगे।

''भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे'' (2 तीमुथियुस 3:5)।

इस प्रकार हमारे लिए बाइबल का प्रोत्साहन इन अन्तिम दिनों में स्पष्ट है :-

''... हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ ...''
प्रकाशितवाक्य 18:1-4

मसीह में एकता

चर्च एकता आन्दोलन, समझौता और बहुमत के आधार पर उन सिद्धान्तों पर सहमति बनाने का प्रयास कर रहा है जिन पर ज्यादा विवाद नहीं है, और इसके साथ ही अधिक विवाद वाले सत्यों को छोड़ने का इरादा भी है। जब कि बाइबल कहती है कि हमारा मार्गदर्शन परमेश्वर के वचन के अनुसार ही होना चाहिये। उसके बाद ही हम एकता हासिल कर सकते हैं।

बाइबल एकता की पक्षधर है किन्तु इस एकता का अधिकार बाइबल की स्पष्ट शिक्षा होना चाहिए। एकता मसीह में ही होना चाहिए।

यीशु इसे इस प्रकार व्यक्त करता है :-

''जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों'' (यूहन्ना 17:21-33)।

परमेश्वर के बच्चे एक साथ खड़े होंगे, और मसीह में और मसीह के साथ एकता हासिल करेंगे। एकता परमेश्वर के मापदण्ड के अनुसार आयेगी न कि समझौता और बहुमत के आधार पर, प्रायः जिसका आधार ''यहोवा यूँ कहता है'' नहीं होता है।

बाबुल में से निकल आओ

बाइबल अन्तिम काल की दशा का वर्णन इस प्रकार करती है :

''क्योंकि उसके व्यभिचार की भयानक मदिरा के कारण सब जातियाँ गिर गई हैं और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख-विलास के कारण धनवान हुए हैं'' (प्रकाशितवाक्य 18:3)।

यह एक अशुभ स्थिति है, किन्तु फिर भी अंधियारे में भी प्रकाश है। परमेश्वर के अनेक लोग अभी भी बाबुल में हैं, और वे अब अन्त समय में एक शक्तिशाली चुनौती को स्वीकार करेंगे। एक आन्दोलन जिसका प्रतीक एक स्वर्गदूत है, उठ खड़ा होगा। यह एक शक्तिशाली स्वर में ''बाबुल'' के पापों की घोषणा करेगा, और वह संदेश है

''हे मेरे लोगों, उस में से निकल आओ कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े'' (प्रकाशितवाक्य 18:4)।

तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ, यह चेतावनी मानव जाति के लिए अन्तिम चेतावनी साबित होगी। यदि आप स्वयं को परमेश्वर की प्रजा मानते हैं तो आपको इस चेतावनी को स्वीकार करते हुए चर्च एकता के बहकाने वाले षड्यंत्र से बाहर निकलना होगा।

इसके बाद हम अन्तिम संदेश को देखेंगे जिसकी घोषणा अनुग्रह के समय के समाप्त होने और हमारे प्रभु यीशु के वापस आने से पहले होना है।

तीसरा संदेश

''फिर इनके बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, कि जो कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले, वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गयी है, पियेगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने, और मेम्ने के सामने आग और गंधक की पीड़ा में पड़ेगा। उनकी पीड़ा का धुंआ युगानुयुग उठता रहेगा और जो उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करते हैं, और उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा। पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं'' (प्रकतिशवाक्य 14:9-12)।

परमेश्वर की मुहर या पशु की छाप

अन्तिम समय में ''पशु की छाप'' या ''परमेश्वर की मुहर'' दो में से एक का चुनाव होना ही है। इस का संबंध परमेश्वर की या मनुष्य की आज्ञा पालन से है। परमेश्वर ने अपनी स्पष्ट मुहर या चिन्ह अपने विश्राम दिन की आज्ञा में दी है। एक मुहर में व्यवस्था देने वाले का नाम, उसका पद और उसके शासन के क्षेत्र का नाम पाया जाता है। विश्राम दिन की आज्ञा में इस प्रकार कहा गया है :

''तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना, परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्राम दिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम काज करना और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है, सबको बनाया और सातवें दिन विश्राम किया। इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशी"ा दी और उसको पवित्र ठहराया'' (निर्गमन 20:8-11)।

यहाँ पर हम पाते हैं, व्यवस्था देने वाले का नाम है- ''यहोवा परमेश्वर,'' व्यवस्था देने वाले का पद है वह जिसने- ''बनाया'' (सृष्टिकर्ता) और व्यवस्था देने वाले का शासन क्षेत्र है- ''स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उसमें है'' कैथोलिक चर्च ने इस आज्ञा के वचन अपने कैटाकिज्म से हटा दिये हैं।

इसका अर्थ है कि जो वचन परमेश्वर को व्यवस्था देने वाला प्रकट करता है, वह पूरी तरह से निकाल दिया गया है। जैसा कि हम उनके कैटाकिज्म में पाते हैं। आज्ञाओं को बदलने के द्वारा वे स्वयं ही व्यवस्था देने वाले बन बैठे हैं।

दानियेल नबी ने एक धार्मिक शक्ति के बारे में लिखा जो उठ कर ''व्यवस्था और समयों को बदल डालेगी'' (दानियेल 7:25)। पोपियत ने परमेश्वर की दस आज्ञाओं को बदल कर इस नबूबत को पूरा किया है। जैसा कि हम उनके कैटाकिज्म में पाते हैं, फिर भी परमेश्वर की आज्ञाएं आज भी लागू हैं। यीशु कहता है :-

''यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ। लाप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जायें। तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरे हुए नहीं टलेगा'' (मत्ती 5:17-18)।

कैथोलिक चर्च ने विश्राम दिन के बारे में बताने वाले वचनों को ही पूरी रीति से नहीं हटाया है, बल्कि उन वचनों को भी समाप्त कर दिया है जो बताते हैं कि हमें अपने परमेश्वर की आराधना बाइबल के अनुसार सातवें दिन में ही करना चाहिये

न कि सप्ताह के पहले दिन रविवार को। दुर्भाग्य से लूथरन चर्च ने भी कैथोलिक चर्च का ही अनुसरण किया है। इसलिए लूथरन कैटाकिज्म में आप केवल इस छोटे शब्द समूह को पायेंगे: ''तू विश्राम दिन को पवित्र मानना'' यहां पर यह स्पष्ट करने के लिए कि सप्ताह का कौन सा दिन विश्राम दिन है, कुछ भी नहीं कहा गया है। इस प्रकार लूथरन चर्च ने भी बाइबल के विश्राम दिन को त्याग कर, मनुष्य द्वारा बनाये गये झूठे विश्राम दिन को मानने का निर्णय किया है।

सब्बत का रविवार में बदलाव, धर्म सुधार आन्दोलन से एक हजार वर्ष पूर्व किया गया था। आज केवल थोड़े से लोग इस झूठी, आधारहीन शिक्षा के बारे में जानते हैं और ज्यादातर लोग रविवार को बाइबल का विश्राम दिन करके मानते हुए पूरे विश्वास के साथ पालन करते हैं, किन्तु यहाँ पर पादरी और पुरोहितों ने विश्वासी लोगों को धोखा देने के लिए सत्य वचन का बाइबल के अनुसार स्पष्टता और शुद्धता से प्रचार नहीं किया है। इस प्रकार ''प्रभु का दिन'' रविवार नहीं बल्कि सब्बत का दिन ही प्रभु का दिन है।

कौन सा दिन सब्बत दिन है?

''किन्तु आप पूछ सकते हैं'' ''बाइबल के अनुसार कौन सा दिन सातवां दिन है?'' यीशु की मृत्यु व उसके दफनाये जाने के संबंध में बाइबल उस दिन को ''तैयारी का दिन'' या ''सब्बत के दिन से पहले का दिन'' कहती है। जिस दिन यीशु की मृत्यु हुई थी, हम इसे ''गुड फ्राइडे'' या ''शुभ शुक्रवार'' भी कहते हैं। जिस दिन यीशु कब्र से जी उठा उसे सप्ताह का पहला दिन अर्थात रविवार कहते हैं। इन दोनों दिनों के बीच के दिन को ''सब्बत-सातवां दिन'' कहते हैं, जो कि शनिवार है। यीशु जो सब्बत का स्वामी है, शनिवार को कब्र में विश्राम करने के बाद सप्ताह के नए कार्य दिवस-रविवार में जी उठा। इस प्रकार बाइबल के अनुसार रविवार कार्य के छः दिनों में पहला दिन है। बाइबल में एक दिन संध्या से अगले दिन की संध्या तक रहता है (उत्पत्ति 1:14-19, लैव्य. 23:32, नहेम्याह 13:16-21, लूका 23:54-56)। इस प्रकार बाइबल के अनुसार सब्बत दिन शुक्रवार संध्या से लेकर शनिवार की संध्या तक रहता है। आज कैथोलिक चर्च तथा अनेक प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाएं रविवार को ''प्रभुवार या प्रभु का दिन'' कह रही हैं। किन्तु बाइबल बताती है कि ''सब्बत का दिन ही प्रभु का दिन है'' (यशायाह 58:13)।

डाईज़ डॉमिनी - प्रभु का दिन

पोप जॉन पॉल द्वितीय अपने व्यक्तिगत पत्र ''डाईज़ डॉमिनी'' या ''प्रभु का दिन'' मई 1998 में स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर का वास्तविक विश्राम दिन सब्बत दिन ही है। किन्तु वह निर्लज्जता से कहते हैं कि ''मसीह के लहू द्वारा छुटकारा पाने वाले मसीही लोगों को सब्बत दिन का अर्थ पुनरूत्थान दिन पर स्थानान्तरण करने का अधिकार प्राप्त है'' पोप यह भी कहता है कि ''रविवार मनुष्यों की रीतियों द्वारा प्राप्त हुआ है और आत्मिक और पास्तरीय बातों में अति उन्नत है'' पोप कहता है कि उन्हें लगा कि उन्हें बदलाव करने के लिए अधिकार प्राप्त हो गया है और वह यह भी मानता है कि रविवार को विश्राम करना मनुष्यों की रीतियों के अनुसार है। (अगस्त 1900, द कैथोलिक प्रेस, सिडनी, आस्ट्रेलिया)

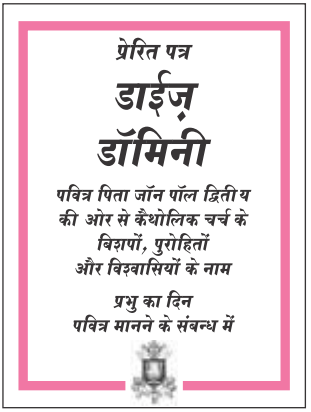

कुछ पहचान चिन्ह

समुद्र से निकलता है – प्रकाशितवाक्य 13:1
समुद्र/पानी = लोग, भीड़, जातियां और भाषाएं–प्रकाशित 17:15 पोपियत का उदय पश्चिमी यूरोप के घनी आबादी वाले क्षेत्र में हुआ है।

इसे अजगर से शक्ति, सिंहासन और अधिकार प्राप्त हुआ है – प्रकाशितवाक्य 13:2

यह ऐसी विश्वव्यापी शक्ति बन गया है जो आराधना को स्वीकार करता है – प्रकाशितवाक्य 13:3–8

'कैथोलिक' का अर्थ विश्वव्यापी होता है। ''यह संसार का सबसे अधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली चर्च है।

इसे प्राणघातक घाव लगा था जो चंगा हो गया–प्रकाशितवाक्य 13:3 1798 में जनरल बर्थियर पोप को बंदी बनाकर फ्रांस ले गया, वहां निर्वासन में उसकी मृत्यु हो गयी। 11 फरवरी 1929 को तानाशाह बेनिटो मुस्सोलीनी और पोप पायस बारहवें ने ''वैटिकन को एक स्वतंत्र राष्ट्र'' का दर्जा दिलाने के लिए एक संधि पर हस्ताक्षर किये हैं – जिसके लागू होने से ''रोमन कैथोलिक एक स्वतंत्र देश में एक स्वतंत्र चर्च बन गया है।''

यह बैंजनी और लाल रंग के वस्त्र धारण करते हैं और अपने आप को सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजाते हैं – प्रकाशितवाक्य 17:4 कैथोलिक चर्च के बिशप और कार्डिनल्स इस तरह के वस्त्र धारण करते हैं।

यह चर्च ईश निंदा करने का दोषी है – प्रकाशितवाक्य 13:1,5,6 ''हम (पोप) इस पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान परमेश्वर का स्थान रखते हैं'' पोप लियो बारहवें ''प्रीष्ट लोग वास्तव में और सच्ची तौर से लोगों के पाप उस शक्ति के द्वारा क्षमा करते हैं जो उन्हें मसीह ने प्रदान की है।'' जोसफ देहार्बे, एस.जे.ए. रिलिजन, पृष्ठ 279

इसने 1260 वर्ष तक शासन किया है – प्रकाशितवाक्य 13:5–7, 538ई0 से 1798ई0 तक (10 फरवरी) भविष्य सूचक गणना–यहेजकेल 4:6– एक दिन = एक वर्ष और बाइबल का एक महीना = 30 दिन का।

परमेश्वर के संतों को सताता है – प्रकाशितवाक्य 17:6 ''पवित्र लोगों का और यीशु के गवाहों का लहू पीकर मतवाली चर्च''। पोपियत के धर्माधिकरण के दौरान 8 करोड़ से अधिक लोगों को प्रताड़ित और कत्ल कर दिया गया।''

यह बात जग जाहिर है कि रोम सात पहाड़ों के ऊपर बसा हुआ है। ''सात सिर सात पहाड़ हैं।'' –प्रकाशितवाक्य 17:9 ''सात पहाड़ों का शहर'' इसका नेतृत्व एक सर्वेसर्वा व्यक्ति द्वारा किया जाता है – प्रकाशितवाक्य 13:18

रहस्मय अंक 666 इसी का है –प्रकाशितवाक्य 13:18, पोप का अधिकारिक पद – वैकेरिएस फिल्ली डीई–666 (विकार ऑफ सन आफॅ गॉड– परमेश्वर के पुत्र के स्थान पर)

अब यह स्पष्ट है कि बाइबल में दिये गये मसीह विरोधी अर्थात ''पशु'' के सभी पहिचान चिन्ह पोपियत पर सही बैठते हैं। धर्म सुधारकों द्वारा इस बात की खुली घोषणा की गई थी कि पोप ही मसीह विरोधी है। यह बात ''ऑग्सबर्ग कन्फेशन ऑफ बिलीफ्स'' में भी कही गयी थी। पृष्ठ 539.

हम ने देखा है कि जैसा की उनके कैटाकिज्म में पाया जाता है, कैथोलिक चर्च ने अपनी आज्ञाओं में से परमेश्वर की मुहर को हटा दिया है। और वे दूसरे संदेश में कहते हैं कि रविवार उनके अधिकार का चिन्ह है और दूसरे लोग रविवार का पालन करने से उनके इस अधिकार का सम्मान करते हैं। (एच.एफ.थॉमस, चॉसलर ऑफ कार्डीनल गिब्बस, एण्ड द डॉये कैटाकिज्म, पृष्ठ 59)

प्रभु भोज और रविवार पालन

अपने पास्तरीय पत्र डाईज़ डॉमिनी में पोप जॉन पॉल द्वितीय ने पुरोहितों को प्रत्येक रविवार के दिन कैथोलिक रीति से प्रभु भोज देने को कहा है। इस का अर्थ है कि उस ने एक ही साथ दो झूठे सिद्धांत, कैथोलिक प्रभु भोज और रविवार पालन जो बाइबल में नहीं पाये जाते हैं, को मानने का आदेश दिया है। अब हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि बातें स्पष्ट होती जा रही हैं। जैसा कि उसने अपने दूसरे पत्र, ''एड ट्यून्डम फिडम'' 28 मई 1998 में कहा है कि जो कोई कैथोलिक सिद्धांतों को नहीं मानता उसे ''एक पांखण्डी या नास्तिक के समान दण्ड'' दिया जाना चाहिए। ये शब्द आने वाले संकट की पूर्व सूचना हैं। लेकिन भयभीत न होइये। मसीह का अनुसरण करने वालों के पक्ष में सर्व–शक्तिमान परमेश्वर है और वह उन्हें धमकियों और सताव के समय भी जयवन्त होने की सामर्थ देगा।

पशु का अंक

हमारा पर्चा ''वॉच आउट फॉर द पॉवर इलाइट एण्ड द ग्लोबल यूनियन'' में हम ''पशु'' की पहचान के 16 चिन्ह पाते हैं। यह सब चिन्ह और उसका अंक 666 भी कैथोलिक चर्च पर सही बैठते हैं। बाइबल कहती है कि यह एक मनुष्य का अंक है न कि कोई गुप्त लिखावट (बार कोड सिस्टम) या माइक्रोचिप को पशु की छाप बताने वाले

प्रचारक, लोगों को भरमा रहे हैं। इसका पशु की छाप से कोई लेना-देना नहीं है। क्रय-विक्रय करने के लिए पशु की छाप न लेने वाले लोगों की पहचान के लिए इलेक्ट्रानिक सिस्टम के प्रयोग की सम्भावना तो है

किन्तु पशु का अंक तो बाइबल के अनुसार एक मनुष्य का अंक है। वह मनुष्य कौन है?

सभी पोप जनों का एक आम टाइटल : वाइकेरियस फिलीडॉइ होता है। जिसका अर्थ है ''पृथ्वी पर परमेश्वर के पुत्र का प्रतिनिधि'' (अवर सन्डे विजिटर, कैथोलिक वीकली, ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन, हंटिंगटन इंडियाना, 18 अप्रैल 1915)। लैटिन भाषा के इन अक्षरों का एक निश्चित अंक मान होता हैं, और इनका जोड़ करने से 666 अंक प्राप्त होता है।

(V या U=5, I=1, C+100, A=0, S=0, L=50, D=500, E=0) कुल योग 666

''पशु का अंक'' ''पशु की छाप'' और ''पशु की मूरत'' ''पशु'' की पहचान के अनेक चिन्हों में से केवल तीन चिन्ह हैं। ये सभी चिन्ह एक विशेष शक्ति पर स्टीक बैठने चाहिए। और ये सभी चिन्ह पोपियत पर सही बैठते हैं। लूथर और दूसरे धर्म सुधारक कितने सही थे, जब उन्होंने कहा कि पोप ही मसीह विरोधी है।

माथे पर या दाहिने हाथ पर

बाइबल कहती है कि पशु की छाप तो माथे पर लगेगी या दाहिने हाथ पर। बाइबल बताती है :-

''और उसने छोटे-बड़े, धनी, कंगाल, स्वतंत्र, दास सब के दहिने हाथ या उनके माथे पर एक-एक छाप करा दी, कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेन-देन न कर सके''
(प्रकाशितवाक्य 13 :16-17)

बाइबल अपनी व्याख्या स्वयं करती है। बाइबल के अनुसार माथे का संबंध विचारों से है और हाथ का संबंध कार्यों से है। (व्यवस्था विवरण 6 :6-9 और निर्गमन 13 :8-10)

जो लोग पशु की छाप को जानने और समझने के बाद भी पोप की रविवार पालन की आज्ञा को अपने मन से मानने का फैसला करते हैं, पशु की छाप लगने का समय आने पर, पशु की छाप अपने माथे पर लेंगे। जो लोग हाथ पर छाप लेते हैं वे अपने हाथों के कामों से अपने चुनाव को प्रकट करेंगे। वे प्रभु के सब्बत दिन में तो कार्य करते हैं किन्तु झूठे विश्राम दिन में अपने हाथों को विश्राम देते हैं। दोनो ही स्थितियों में वे ''पशु की छाप'' प्राप्त करते हैं। संक्षेप में ''पशु की छाप'' प्राप्त करने का अर्थ ''पशु'' के निर्णय को अपना कर परमेश्वर के वचन विरोधी विचारों को सही ठहराना है।

जब कि बहुत से लोग सांसारिक शक्ति के चिन्ह के सामने अपनी भक्ति दर्शाकर ''पशु'' की छाप स्वीकार करते हैं। एक छोटा समूह परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति दिखाते हुए परमेश्वर के अधिकार चिन्ह ''परमेश्वर की मुहर'' प्राप्त करता है।

''पशु की छाप'' लेने वालों के लिए स्वर्ग से एक चेतावनी भरा संदेश सुनाई देता है।''

''जो कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले। तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा उसके क्रोध के कटोरे में डाली गयी है, पियेगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गंधक की पीड़ा में पड़ेगा'' (प्रकाशितवाक्य 14:9–10)

''परन्तु जब तक सत्य को भली प्रकार से जानने और समझने के बाद तृस्कार नहीं कर दिया जाता, तब तक कोई भी जन परमेश्वर के कोध का सामना नहीं करेगा। अनेक लोग हैं जिन्हें वर्तमान काल के विशेष सत्यों को सुनने का कभी अवसर ही नहीं मिला। चौथी आज्ञा को मानने का वास्तविक कारण उन्हें नहीं बताया गया। परमेश्वर जो मनों को जांचता और विचारों को पढ़ता है, सत्य के खोजियों को, महान विवाद के संबंध में भ्रमित होने न देगा। शाही आदेश किसी पर अज्ञानता की दशा में नहीं आयेगा। प्रत्येक को बुद्धिमानी से फैसला करने के लिए पर्याप्त प्रकाश अवश्य मिलेगा।'' (द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी, पृष्ठ 605)

दुर्भाग्य से बहुत से लोग अधिकारियों के दबाव में हार मान कर, नौकरी जाने या भोजन–वस्त्र विहीन होने के भय से पशु की छाप स्वीकार करेंगे, किन्तु मसीह का सच्चा शिष्य अन्तिम विपत्ति के समय परमेश्वर की सहायता पर भरोसा रखेगा।

आप किसके अधिकार को चुनेंगे?

इस छोटे पर्चे में आपको यह बताया है कि प्रभु यीशु जिसने सब्बत (शनिवार) की स्थापना की है, या पोपियत जो रविवार पालन करना सिखाती है, में से आप को एक को चुनना है। इस सम्बन्ध में हम एक बात स्पष्ट करेंगे, यीशु ने सृष्टि रचना में भाग लिया। बाइबल कहती है ''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ'' (यूहन्ना 1:2–3+4)। उसने सब्बत रचना में योगदान दिया और बाइबल कहती है कि यीशु सब्बत का भी प्रभु है (मरकुस 2:28)।

इस प्रकार प्रभु यीशु के अलावा कोई और इसे बदल ही नहीं सकता। क्या आप मसीह के मुख से निकला केवल एक शब्द बता सकते हैं जो कहता हो अब हमें सब्बत दिन को छोड़कर रविवार को विश्राम दिन के रूप में मानना चाहिए? हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरे हुए नहीं टलेगा और बाइबल इसके आगे कहती है :–

''यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है।'' (इब्रानियों 13:8)

इससे स्पष्ट है कि विश्राम दिन सहित, परमेश्वर की आज्ञाएं अभी भी लागू हैं। अब प्रश्न यह है कि आप किस के अधिकार को चुनेंगे? क्या उनके जो मनुष्य की आज्ञानुसार रविवार को विश्राम दिन मानते हैं या परमेश्वर के अधिकार को जिस के अनुसार सब्बत दिन शनिवार है?

बाइबल कहती है इस प्रश्न का उत्तर ही अंतिम समय में आप की आखिरी परीक्षा साबित होगा।

क्या आप पोपियत की शिक्षा के अनुसार रविवार को विश्राम दिन मानते हुए पशु की छाप लेंगे और पशु की पूजा करेंगे या फिर आप परमेश्वर की आज्ञा मान कर सब्बत दिन का पालन करते हुए परमेश्वर की आराधना करेंगे? (प्रकाशितवाक्य 13:15–17 और प्रकाशितवाक्य 14:9–12)

प्रत्येक जन अपना चुनाव इस विषय का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही करेगा। यह पर्चा इस चुनाव को करने में आपकी सहायता हेतु ही तैयार किया गया है, किन्तु अधिक जानकारी के लिए आप ''द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी'' या हमारा दूसरा पर्चा ''लिबर्टी इन डैन्जर'' पढ़ सकते हैं। इस प्रकार सब्बत, ईश्वर के प्रति आप की वफादारी की परीक्षा का बड़ा कारण होगा, क्योंकि ''महान विवाद'' कुछ और नहीं अपितु सत्य और आराधना ही तो है। इस परीक्षा से परमेश्वर की सेवा करने वाले और उसकी सेवा नहीं करने वालों में अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। जगत की शिक्षा के अनुसार और चौथी आज्ञा के विरोध में झूठे विश्राम दिन को मानने का अर्थ परमेश्वर विरोधी शक्ति का समर्थन करना कहलायेगा,

जब कि परमेश्वर की आज्ञानुसार सच्चे विश्राम दिन को मानने का अर्थ सृष्टिकर्ता परमेश्वर के प्रति भक्ति दिखाना कहलायेगा। जबकि एक समूह सांसारिक शक्तियों की भक्ति का चिन्ह प्राप्त करता है, दूसरा समूह ईश्वरीय शक्ति की भक्ति का चिन्ह प्राप्त करके परमेश्वर की मुहर प्राप्त करता है।

परमेश्वर की मुहर आपके माथे पर

यद्यपि विश्राम दिन की आज्ञा में परमेश्वर की स्पष्ट मुहर पायी जाती है और परमेश्वर कहता है कि सब्बत दिन परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में सदा काल के लिए एक चिन्ह ठहरेगा। (यहेजकेल 20:12+20)। हम समझते हैं कि यह मुहर परमेश्वर के जिन संतानों के माथे पर लगेगी, वे विशेष चरित्र वाले होंगे। यह मुहर उन विश्वासियों को दी जायेगी, जो बचे रहेंगे और ''पशु की छाप'' पर जयवंत होंगे।

''परमेश्वर की मुहर'' वह चिन्ह है जो परमेश्वर के अपनी संतानों से प्रसन्न होने का प्रमाण है। बाइबल के अनुसार पश्चाताप करके मसीह में विश्वास करने वालों के लिए एक मुहर के रूप में पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा की गई है।

पवित्र आत्मा की मुहर एक विश्वासी के जीवन में तब तक बनी रहेगी जब तक विश्वासी मसीह में बने रहकर उस की इच्छा का पालन करता रहेगा (इफिसियों 1:13 प्रेरितों के काम 5:32)।

अब हम यीशु के दूसरे आगमन से ठीक पहले परमेश्वर के एक स्वर्गदूत द्वारा लगाई जाने वाली महुर देखेंगे। बाइबल कहती है कि परमेश्वर का स्वर्गदूत उनके माथे पर परमेश्वर की मुहर लगायेगा जो धार्मिक लीडर्स के जीवन में पाये जाने वाले घृणित कामों के कारण रोते और आहें भरते हैं।

माथे पर ''परमेश्वर की मुहर'' ऐसा चिन्ह है जिसे मनुष्य नहीं केवल स्वर्गदूत ही देख सकते हैं (यहेजकेल 9:4–6)। माथे पर परमेश्वर की मुहर होने का अर्थ बुद्धि और आत्मा दोनों से सत्य में इस प्रकार स्थापित होना है कि परमेश्वर की सन्तान हिलाये न जा सकें (प्रकाशितवाक्य 14:1–6)।

वे जो स्वयं पर भरोसा नहीं करते परन्तु परमेश्वर के समक्ष दीन होकर पवित्र आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन बिताते हुए स्वर्गीय मुहर को प्राप्त करने के लिए तैयारी करते हैं यह मुहर माथे पर लगने के

बाद इस प्रकार ''परमेश्वर की मुहर'' या स्वर्गीय स्वीकृति उन्हें दी जायेगी जिन में परमेश्वर का आत्मा है, और वे आत्मा में इस प्रकार शक्तिशाली बनेंगे कि डिग न सकें। जब विपत्तियां आयेंगी तो उन्हें कोई हानि न होगी, और वे मसीह से उसके दूसरे आगमन पर मिलने के लिए तैयार रहेंगे।

बाइबल बताती है कि ''पशु की छाप'' यीशु के पुनः आगमन और अनुग्रह का द्वार बन्द होने के पूर्व दिखाई देगी (प्रकाशितवाक्य 13:11–16)। हम उनके विषय पढ़ते हैं...

> ''जो उस पशु पर, और उसकी मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवंत हुए थे, उन्हें उस कॉच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा।'' (प्रकाशितवाक्य 15:2)

यूहन्ना ने ''पशु की छाप'' पर जय पाने वालों को यीशु के सिंहासन के समक्ष, जो स्वर्ग में है, खड़े हुए देखा (प्रकाशितवाकय 4:2 और 7:9)। वे जयवंत हुए थे, जिसका अर्थ है कि वे संघर्षरत थे। उद्धार पाये हुए लोग जो यीशु के आगमन के समय जीवित रहेंगे, ''पशु की छाप'' के साथ एक बड़े संघर्ष से होकर निकलेंगे।

''परमेश्वर की मुहर'' या ''पशु की छाप'' रूपी महान परीक्षा हमारे अन्त का निर्धारण करेगी। परमेश्वर की ''शेष संतान'' को परमेश्वर की मुहर पाने के लिए इस परीक्षा में से गुजरना ही होगा। वे सब जो परमेश्वर की व्यवस्था पालन करते हुए आज्ञाकारिता प्रकट करते और झूठे सब्बत (रविवार) को मानने से इन्कार करते हैं, स्वयं को परमेश्वर के झण्डे के नीचे लाकर ''जीवित परमेश्वर की मुहर'' प्राप्त करेंगे। वे सब जो उस सत्य से मुकर जाते हैं जिसका उदगम स्वयं परमेश्वर में है, और जो रविवार को सब्बत स्वीकार करते हैं, पशु की छाप प्राप्त करेंगे।

अभी स्वयं को तैयार करने का समय है। ''परमेश्वर की मुहर'' किसी अपवित्र स्त्री या पुरूष के माथे पर कभी भी नहीं लगेगी। यह ऐसे किसी स्त्री या पुरूष के माथे पर नहीं लगेगी जो सांसारिकता के प्रेम का अभिलाषी है, यह ऐसे किसी भी स्त्री या पुरूष पर नहीं लगेगी जो झूठी जीभ और छली हृदय वाला है। परमेश्वर की महुर प्राप्त करने वाले प्रत्येक जन को परमेश्वर के समक्ष दोष रहित होना चाहिए। जैसे उनका लक्ष्य स्वर्ग से कम कुछ भी नहीं है।

रविवार आंदोलन आरम्भ हो चुका है

विश्व व्यापी रविवार आंदोलन चलाया जा रहा है। पोप जॉन पॉल द्वितीय ने रविवार को विश्राम दिन के रूप में मानने के लिए प्रोत्साहन दिया है। ''द क्रिश्चियन कोयलेशन'' जैसे बड़े धार्मिक आन्दोलन बता रहे हैं कि हमें पुनः परमेश्वर की दस आज्ञाओं की ओर लौटना होगा। युरोपियन यूनियन में प्रोटेस्टेंट्स और कैथोलिक ऐसे विषयों को खोज रहे हैं, जिन पर उनकी सहमति बन सके और रविवार को विश्राम दिन के रूप में मानना उनमें से एक विषय हो सकता है। यूरोप में ''इन्टर फेथ एलांइस'' सी.ई.सी. कलीसियाओं को कैथोलिक पैर्टन पर एकीकृत करने की एक मुहीम चला रही है, और रविवार इन के लिए सर्वमान्य दिन होगा। जब हैरल्ड पंचम का नॉर्वे के राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ तो उसने रविवार को विश्राम दिन के रूप में दृढ़ करने हेतु अपने 'आशीष उत्सव' का आयोजन रविवार के दिन रखने की इच्छा जताई। पुरोहित और बिशप रविवार वाले उत्सव को पुनः जीवित करने की कामना रखते हैं। कुछ चाहते हैं कि इसके समर्थन में एक सर्व परिचित आन्दोलन चलाया जाये। जबकि दूसरे इस पक्ष में हैं कि पवित्र रविवार को न मानने वालों को दण्डित किया जाये।

हम यह भी देख रहे हैं कि बिशप, और पादरीगण, ट्रेड यूनियन, पर्यावरण संस्थानों और अनेक व्यवसायिक और औद्योगिक इकाईयों के सदस्य बन कर किस प्रकार रविवार का बचाव करते हुए इसे सप्ताह के दूसरे दिनों से अलग दर्जा दिलाने का प्रयास कर रहे हैं। सिद्धांतिक रूप से उनका उद्देश्य अच्छा हो सकता है। यह अच्छी बात है जो हम चाहते हैं कि विश्राम का दिन अधिक अर्थपूर्ण अनुभवों से भरा हो। हमें विश्राम, शारीरिक और आत्मिक ताज़गी के लिये आत्मिक नवीनीकरण की आवश्यकता है किन्तु हम जो मसीही के रूप में जाने जाते हैं, यदि एक विश्राम दिन का समर्थन करते हैं तो निश्चय ही यह विश्राम दिन बाइबल का विश्राम दिन होना चाहिए। जिसे स्वयं सृष्टिकर्ता ने पवित्र ठहराया और आशीष देकर विश्राम किया, जो कि सप्ताह का सातवां दिन है। यह उचित नहीं हैं कि कोई सांसारिक अधिकारी हमें विश्राम दिन मानने या न मानने के लिए विवष करे।

विश्राम दिन को मानने की क्रिया बल से नहीं किन्तु स्वेच्छा से होना चाहिए, किन्तु बाइबल कहती है कि इस विषय पर विवेक की स्वतंत्रता का हनन किया जायेगा। हम पहले से ही धार्मिक बाध्यता की तैयारी को देख रहे हैं।

पशु की छाप शीघ्र आ रही है

रविवार का विश्राम दिन को रूप में बल और कानून द्वारा स्थापना होने के बाद, निकट भविष्य में ''पशु की छाप'' की परीक्षा आ जायेगी।

जब कि हम इस झूठी शिक्षा को, जो विश्राम दिन के संबंध में दी जा रही है, जान ही चुके हैं, तो हमें आज ही अपना फैसला भी कर लेना चाहिए। (याकूब 4:17)। यह हमारा पवित्र कर्तव्य है कि हम इस विषय में स्वयं को पूरी तरह यीशु के पक्ष में कर लें, ताकि परीक्षा की कठिन घड़ी में पवित्र आत्मा हमारा शक्ति स्रोत बन सके।

शेष सन्तान जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु का विश्वास रखते हैं, स्थिर रहेंगे–

बाइबल इस झूठे विश्राम दिन की अधीनता स्वीकार न करने वालों का वर्णन इस प्रकार करती है,

> ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।'' (प्रकाशितवाक्य 14:12)

इस प्रकार हमें परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशु के विश्वास से भली भांति परिचित हो जाना चाहिए।

बाइबल स्पष्टता से कहती है कि यीशु के आने से पूर्व भयंकर आत्मिक संघर्ष होगा। पशु की छाप स्वीकार न करने वाले हर संभव तरीके से सताये जायेगें। यह कहती है कि उन्हें खरीदने–बेचने की मनाही होगी, और उन्हें मार डालने के आदेश दिये जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 13:15–16)। पूरा संसार इस पोपियत नामक पशु का अनुशरण आश्चर्य करते हुए करेगा, लेकिन विश्वास योग्य 'शेष संतान' (बकिया चर्च के लोग) इस दबाव में नहीं आयेंगे। बाइबल कहती है कि वे दूसरी स्त्रियों (कलीसियाओं 2 कुरिन्थियों 11:2) के साथ अशुद्ध नहीं हुए हैं। दूसरे शब्दों में वे बाबुल की नशामय मदिरा को स्वीकार नहीं करते हैं, किन्तु अपने जीवन में परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करते हुए स्पष्ट स्वर में ''तीन स्वर्गदूतों'' के संदेश को प्रचार करते हैं। वे अपने घमण्ड के अनुसार नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में परमेश्वर की इच्छानुसार चलते हैं। उनके विषय में कहा गया है... उन्होंने मसीह के लिए अपने जीवन को पवित्र किया है,

> ''ये वे ही हैं कि जहां कहीं मेम्ना (यीशु) जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं....'' ''और उनके मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं।'' (प्रकाशितवाक्य 14:1–5)

और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मनुष्य और परमेश्वर के समक्ष धार्मिकता का जीवन जीने में सफल हुए हैं। बाइबल उन्हें निर्दोष कहती है। मेम्ना भी जो बलिदान किया जाता था, निर्दोष होता था। यह मसीह की ओर संकेत करता है जो स्वयं भी निर्दोष था। पवित्र आत्मा हम में होने से हम भी यीशु का चरित्र जी सकते हैं और हमसे पाप नहीं होगा। कोई गलत फहमी नहीं रहना चाहिए। हम स्वयं की शक्ति से नहीं, किन्तु परमेश्वर की शक्ति और सहायता से, परमेश्वर की भली इच्छा के अनुसार पवित्र जीवन जी सकते हैं (1 पतरस 1:14–16 और फिलिप्पियों 2:12–13)। इस प्रकार बाइबल आपके सामने चुनौती रखती है, यदि आप स्वयं को परमेश्वर के अयोग्य समझते हैं और भविष्य के भय से भयभीत हैं आपको मालूम होना चाहिए कि पवित्र आत्मा आपको अभी अपने पापों के भार के साथ यीशु के सामने समर्पण करने के लिए बुला रहा है। अपने सब पापों को यीशु के कदमों के पास रखिये कि वह आपके पापों का प्रायश्चित कर सके और आपका सम्बंध उन मनुष्यों के साथ ठीक कर सके जिन्हें आपने या उन्होंने आप को चोट पहुँचाई है, फिर मसीह की धार्मिकता आपकी अपनी धार्मिकता हो जायेगी। इसके साथ ही हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना भी करना चाहिए कि हम मसीह के पथ पर बने रह सकें और प्रत्येक बात में धार्मिकता का जीवन बिता सकें। फिर मसीह अपने लोगों को लेने के लिए शीघ्र आयेगा तो हम परमेश्वर के अनुग्रह से उससे मिलने के लिए तैयार पाये जायेंगे।

पशु की मूरत

चूंकि ''पशु'' के सभी पहचान चिन्ह पोपियत पर सही बैठते हैं, तो ''पशु की मूरत'' भी इसी सिस्टम की एक नकल होना चाहिए। ''पशु की मूरत'' का अर्थ विधर्मी प्रोटेस्टेंटिज्म से है जिसमें प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाएं सरकार की सहायता से अपनी उपासना और विचारों को बल पूर्वक लोगों पर लादने की चाहत रखती हैं।

यूरोप में अनेक देशों मे कलीसियाएं सरकार द्वारा नियंत्रित हैं, जहाँ कलीसिया और सरकार मिलकर कार्य करते हैं। कलीसिया को अपने धार्मिक कार्यो के लिए धन, सरकारें उपलब्ध करवाती हैं। यह कैथोलिक सिस्टम के समान है। अन्धकारमय मध्य युग में हम इस प्रकार के स्पष्ट उदाहरण देख चुके हैं कि कैथोलिक चर्च ने दूसरे विश्वास के लोगों को सताने के लिए अपनी शक्ति का दुर्पयोग किया था। बाइबल कहती है कि ठीक इसी प्रकार अन्त समय में शक्ति का दुर्पयोग किया जायेगा (प्रकाशितवाक्य 13:11–18)।

चूंकि संयुक्त राज्य के संविधान में सरकार और कलीसियाएं अलग–अलग हैं, इसीलिए आप यहाँ पर पोपियत जैसी सरकार आने की भले ही कल्पना तक न करें। लेकिन बाइबल बताती है कि ठीक वैसा ही होने वाला है। वे सरकार द्वारा धार्मिक कानून, खासतौर पर रविवार को पवित्र मानने संबंधी कानून लागू करेंगे।

लेकिन आप कहेंगे कि संयुक्त राज्य अमेरिका तो एक धार्मिक स्वतंत्रता का देश है। ठीक है लेकिन बाइबल इसे दो सींग वाले मेम्ने के रूप में भी प्रस्तुत करती है, जो अज़गर के समान बोलता था।

इसके आरंम्भिक इतिहास में संयुक्त राज्य अमेरिका एक धार्मिक आजादी वाले देश के समान दिखाता था। मेम्ने के सींग युवा, भोलापन और सभ्यता के प्रतीक हैं।

एच.आर. 2431

1998 का अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता का कानून

27 अक्टूबर 1998 को संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति विलियम जे. क्लिंटन के हस्ताक्षर द्वारा पारित

जब देश ने 18 वीं सदीं में एक राष्ट्र का रूप लेना शुरू किया। प्रोटेस्टेंज्मि और संघीय प्रकार की सरकार ही आधारभूत सिद्धांत थे। धार्मिक स्वतंत्रता सुरक्षित थी कि प्रत्येक अपने विवेक के अनुसार ईश्वर की आराधना कर सके। बाइबल बताती है कि यह स्थिति बदल जायेगी और अन्त में यह देश अजगर के समान बोलेगा। एक देश अपनी विधायिका के द्वारा बोलता है।

बहुतों ने देखा है कि कांग्रेस ने पहला धर्म संबंधी कानून, जैसे एच.आर. 2431, बनाना शुरू कर दिया है। यह कानून नव–नियुक्त कार्यालय को दुनिया भर के धर्मों की धार्मिक गतिविधियों पर नजर रखने का अधिकार देता है। जो धार्मिक सताव का रास्ता अपनायेंगे उन्हें यह कानून दण्ड देगा। यह कार्यालय धार्मिक सताव की परिभाषा तय करेगा। उदाहरण के लिए, क्या यह पर्चा कैथोलिक चर्च के प्रति सताव माना जायेगा?

अमेरिका का संविधान कहता है कि कांग्रेस किसी धार्मिक कानून की घोषणा नहीं करेगी। यह कहता है– ''कांग्रेस धर्म के परिचय या उसके स्वतंत्र अनुपालन में बाधक होने वाला कोई भी कानून नहीं बनाएगी'' स्वतंत्रता की गारंटी देने वाली इन बातों को पूरी तरह त्यागे बिना राष्ट्र अधिकारी धार्मिक धोखे को लागू नहीं कर सकते। यह प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और आगे और आयेगा। हाँ, बाइबल कहती है कि पोपियत (पहले पशु) का सारा अधिकार संयुक्त राज्य अमेरिका (दूसरे पशु) के द्वारा काम में लाया जायेगा। वे ''पशु की मूरत'' की स्थापना करेंगे। उन्होंने पहले ही आरम्भ कर दिया है।

संयुक्त राज्य अमेरिका रविवार पालन को बल पूर्वक लागू करने में अगुवाई करेगा।

बहुत लोगों को अमेरिका को ''पशु की छाप'' (बल पूर्वक रविवार पालन) लागू करने में अगुवाई करते देख आश्चर्य होगा, इसके बाद दूसरे देश भी अमेरिका का अनुसरण करेंगे। जो कोई इन शक्तियों (धर्म भ्रष्ट प्रोटेस्टेन्जिम और कैथोलिक चर्च) का विरोध करेगा और ''पशु की छाप'' लेने से इन्कार करेगा, उसे देशद्रोही, दैवीय आपदाओं और विपत्तियों का कारक तथा विश्व शान्ति का बाधक घोषित किया जायेगा। बाइबल कहती है कि अन्त में उन्हें नाश करने का आदेश दिया जायेगा (प्रकाशितवाक्य 13:11–16)।

ठीक इसी समय यीशु मसीह जो संसार का उद्धारकर्ता है, अपने लोगों को लेने के लिए वापस आ जायेगा। (''मेम्ने के समान पशु'' के विषय अधिक जानने के लिए ''द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी, पृष्ठ 439–455 को पढ़े)।

भयानक दण्ड

बाइबल स्पष्ट करती है कि ''पशु की छाप'' प्राप्त करने वाले भयानक दण्ड पायेंगे। बाइबल हमें स्पष्ट बताती है कि ''पशु की छाप'' को लगवाने वाले, अनुग्रह का द्वार बन्द होने के तुरन्त बाद आने वाली ''7 विपत्तियों'' द्वारा दण्डित किये जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 15:5–8)। बाइबल में ऐसा कहा गया है :–

> ''फिर मैंने मन्दिर में किसी को ऊँचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना कि जाओ, परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो। अत: पहले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की छाप थी, और जो उसकी मूरत की पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और दुखदायी फोड़ा निकला''(प्रकाशितवाक्य 16:1–2)।

परमेश्वर के क्रोध के प्याले से निकल कर आने वाली शेष विपत्तियां भी उन्हीं लोगों पर आयेंगी जिन्होंने ''पशु की छाप'' को स्वीकार किया है, जबकि परमेश्वर की सन्तान इनसे बचे रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 16:1–2)। आज प्रत्येक जन शैतान की विनाशक शक्तियों के आधीन है, किन्तु परमेश्वर का पहिचान चिन्ह ''परमेश्वर की मुहर'' प्राप्त करने वाले इस्राइलियों के समान जैसा कि वे भी मिस्र को छोड़ने के पहले आयी 10 विपत्तियों से पीड़ित नहीं हुए थे, उसी प्रकार परमेश्वर की सन्तान भी इन अन्तिम 7 विपत्तियों से बचे रहेंगे (निर्गमन 8:22)।

''पशु की छाप'' लेकर शैतान का साथ देने वाले लोगों पर अन्तिम और सबसे अधिक भयानक विपत्ति आयेगी। उनका आग और गंधक की झील में डालकर नाश होने का वर्णन बाइबल इस प्रकार करती है :

> ''पर डरपोकों और अविश्वासियों और घिनौना और हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्हों और मूर्ति पूजकों और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गंधक से जलती रहती है। यह दूसरी मृत्यु है।''(प्रकाशितवाक्य 21:8)

परमेश्वर का विरोध करने वालों का न्याय उनके कार्यो के अनुसार होगा और भूसी के समान जलाये जायेंगे, वे नाश हो जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 20:11–15 और मलाकी 4:1)।

यह दुष्टों और दुष्टता का साथ देने वालों का अन्तिम न्याय होगा। इसके बाद परमेश्वर एक नये आकाश

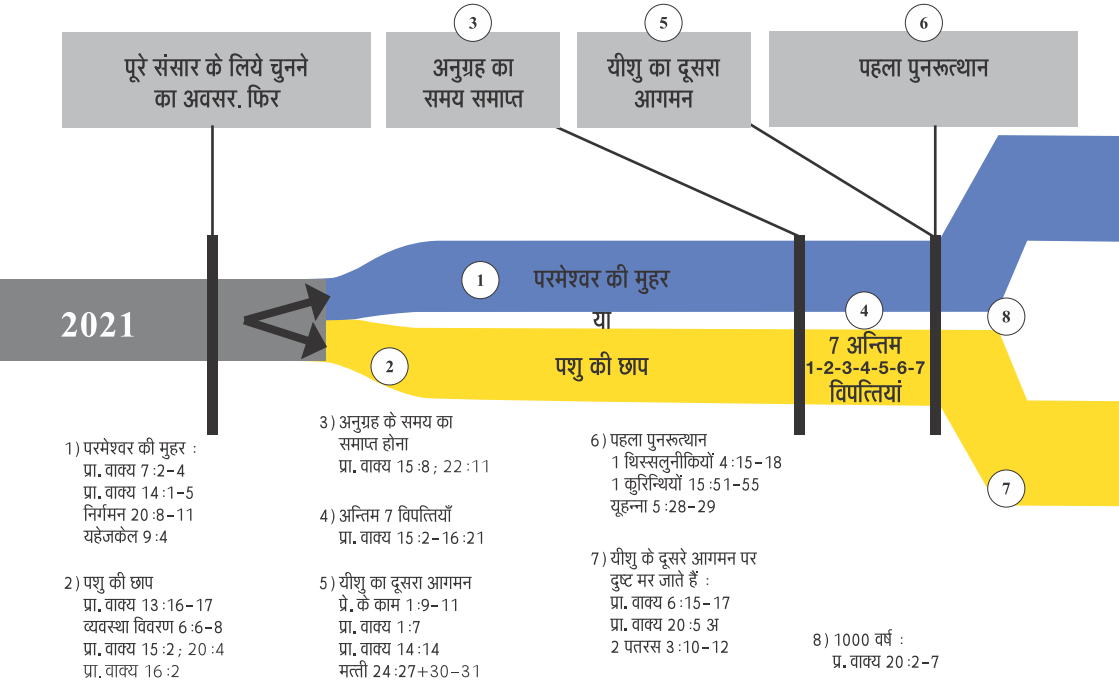

और नई पृथ्वी को बनायेगा जिसमें धार्मिकता निवास करती है। चक्र पूरा हो चुका होगा। मनुष्य पुन : खोये हुए स्वर्ग लोक, बाग-इ-अदन में रहते हुए परमेश्वर से आमने-सामने बातें करेगा, क्योंकि उसे महिमामय देह दी जायेगी (1 कुरिन्थियों 15 :50-54)। जहां मुश्किलें उस महिमा की तुलना में तुच्छ ठहरेंगी। ऐसे स्थान को प्राप्त करने की सब की चाहत होना चाहिए। आईये प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा वहां पहुंचने में हमारी सहायता करे। समय के चिन्ह बता रहे हैं कि वह घड़ी दूर नहीं है :-

उद्धार प्राप्त लोग सबसे पहले स्वर्ग जायेंगे

यीशु के आने पर उद्धार पाये हुए लोग हवा में उठा लिये जायेंगे और स्वर्ग को ले जाए जायेंगे। इसका वर्णन बाइबल में इस प्रकार है :-

> ''क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जायेगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे'' (1 थिस्सलुनीकियों 4 :15-17, फिलिप्पियों 3 :20-21, यूहन्ना 14 :1-3)।

उद्धार पाये हुए लोग हवा में प्रभु के साथ ऊपर उठा लिए जायेंगे। उस समय यीशु पृथ्वी तक नीचे नहीं आयेगा बल्कि उद्धार पाये हुए लोग हवा में ऊपर उठा लिये जायेंगे, वे तो स्वर्ग के लिए ठहराये गये हैं (प्रकाशितवाक्य 15 :2)।

बाइबल बताती है कि वे स्वर्ग में 1000 वर्ष तक रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 20 :4)। यह हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु और उद्धार पाये हुओं के साथ महिमामय समय होगा। लेकिन यह गंभीर समय भी होगा। बाइबल प्रकट करती है कि उद्धार पाये हुए लोग न्याय करेंगे। वे यह देखेंगे कि जो नाश हुए हैं, उन्हें सही न्याय मिला है और परमेश्वर सच्चा न्यायी है।

1000 वर्ष के बाद, बिना उद्धार पाये दुष्ट लोग भी अपना अन्तिम न्याय पाने के लिए अपनी कब्रों से जी उठेंगे। वे आग की उस झील में डाले जायेंगे जिसका वर्णन किया जा चुका है। ऊपर दिये गये समय चार्ट का अवश्य अध्ययन करें।

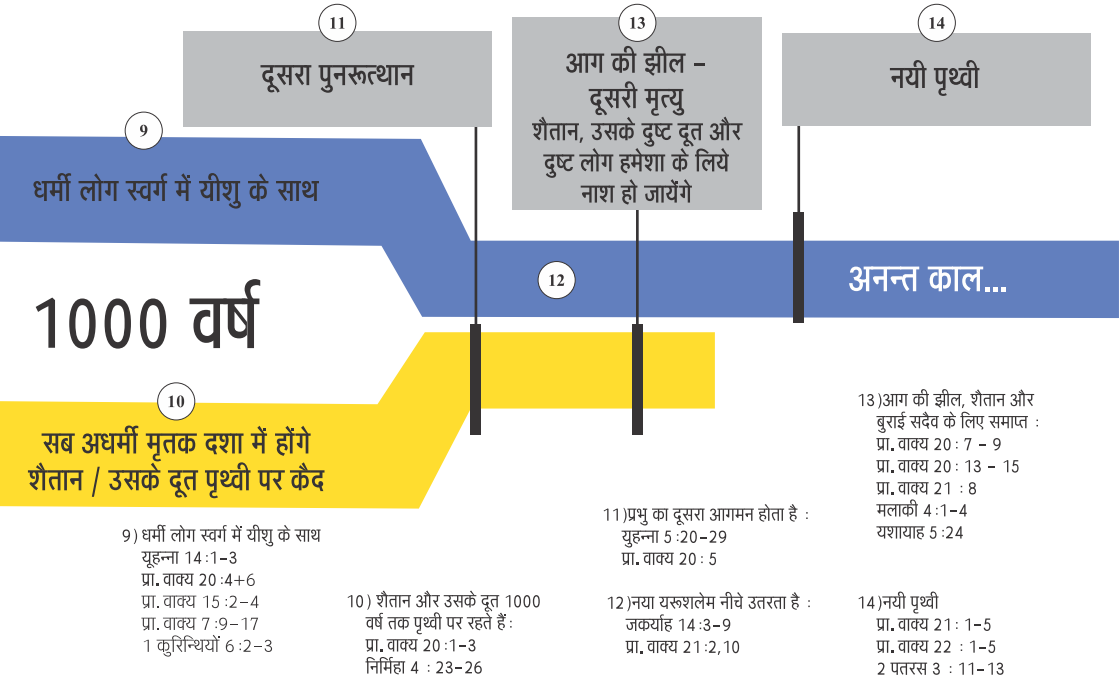

नियन्त्रण परमेश्वर के हाथों में ही है–

भले ही ऐसा लगे कि शासन संसार के शासकों के हाथ में है, किन्तु वास्तव में परमेश्वर ही शासन करता है। वह अपने लोगों को छुड़ाने के लिए ठीक समय पर दखल देगा और उन्हें स्वर्ग में ले जायेगा, जहां वह स्वयं है (यूहन्ना 14 :1–3)। इसलिये बाइबल इस युद्ध के परिणाम का वर्णन इस प्रकार करती है :

''और मैंने आग से मिले हुए कांच का सा समुद्र देखा, और जो लोग पशु पर, और उसकी मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा–गा कर कहते थे कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े अद्भुत हैं,और हे युग–युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है'' (प्रकाशितवाक्य 15 :2–3)।

बाइबल प्रकाशितवाक्य 17 :14 में, मेम्ना (मसीह) और उसके समर्थकों की, ''पशु'' (पोपियत) और उसे समर्थन करने वालों पर एक और विजय का वर्णन इन शब्दो में करती हैं :

''वे मेम्ने से लड़ेंगे और मेम्ना उन पर जय पायेगा, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है, और जो बुलाए हुए, और चुने हुए और विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय पायेंगे'' (प्रकाशितवाक्य 17 :4)।

मसीह और जो उसके साथ हैं, वे भविष्य में आने वाले संघर्ष में जयवन्त होंगे। विश्वासियों में यीशु का विश्वास होगा। परमेश्वर से प्रेम और पवित्र आत्मा की मदद से वे परमेश्वर की आज्ञाओं का दबाव में नहीं किन्तु आनन्द से पालन करेंगे। बाइबल कहती है :

''जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं।...और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं है'' (1 यूहन्ना 5 :2–3)।

कौन हमारे साथ आयेगा?

तीन स्वर्गदूत जो ''तीन अलग–अलग संदेशों'' का प्रचार करते हैं, वे उन मनुष्यों के प्रतिनिधि हैं जिन्होंने अपने जीवन को मसीह के लिए समर्पण कर दिया है। वे ऊँचे स्वर में तीन स्वर्गदूतों के संदेश का प्रचार करेंगे।

यह स्वर ऊँचा और स्पष्ट होगा क्योंकि पवित्र आत्मा अधिकाई के साथ कार्य करेगा। क्या आप भी हमारे साथ मिल कर इन ''तीन स्वर्गदूतों के संदेश'' को प्रचार नहीं करेंगे? समय आ गया है कि अभी निर्णय किया जाये। यदि आप भी शैतान की जंजीर और सत्ता श्रेष्ठता में स्वयं को बंधा हुआ पाते हैं, तो स्वतंत्र होने के लिए स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करें, बाइबल निवेदन करती है :

> ''जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ, वह क्या यह नहीं कि अन्याय ने बनाये हुए दासों, और अंधेर सहने वालों का जुआ तोड़ कर उनको छुड़ा लेना और सब जुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देना'' (यशायाह 58:6)।

परमेश्वर के वचन और उसके वचन के सिद्धांतों के विरूद्ध हम पर लादे गये प्रत्येक बोझ को उतार फेंकने की शक्ति प्राप्त करने के लिए आप और मुझे प्रार्थना करना चाहिए। उन्होंने हमें मनुष्यों द्वारा बनाये गये हजारों नियमों से बांध रखा है जिस कारण हम स्वतंत्र नहीं हैं। पाप के बोझ से छूटने पर ही सच्ची स्वतंत्रता मिल सकती है जिसके लिए हमें स्वर्गीय शक्तियों का सहयोग करना चाहिए। बाइबल एक बार फिर हमें उत्साह वर्धक शब्दों में याद दिलाती है :

> ''सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।'' (यूहन्ना 8:36) और ''जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है'' (2कुरिन्थियों 3:17)।

क्योंकि हम अन्त के समय में जी रहे हैं, और अनुग्रह का द्वार बंद होने को है, परमेश्वर के लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने सर्वोत्तम प्रयासों से उद्धार के समाचार का प्रचार करें कि शैतान के बंधनों से आज़ाद होने के लिए लोगों की आंखें खुल सकें। परन्तु बाइबल अन्त समय के लोगों को ''लौदीकिया'' की कलीसिया कहती है (प्रकाशितवाक्य 3:14-22)। लौदीकिया का चरित्र मूढ़ता और गुनगुनेपन का है। तीन स्वर्गदूतों के संदेश पर विश्वास करने का दावा करने वाले लोग गुनगुने हैं और इस संदेश को दूसरों तक पहुँचाने के लिए भरसक प्रयास नहीं कर रहे हैं। वे न तो ठण्डे हैं और न ही गर्म हैं। वे उदासीन हैं और इसके साथ ही इस बात पर घमण्ड करते हैं कि उन्हें किसी बात की घटी नही हैं।

वे अपने स्वार्थ को त्यागने के लिए तैयार नहीं हैं। वे सोचते हैं कि उन्हें आत्मिक रूप से किसी वस्तु की घटी नहीं है, किन्तु वे नहीं जानते हैं कि वे कंगाल, अन्धे और नंगे हैं। वे अपनी आत्मिक दशा के प्रति अंधे हैं। क्या आप भी इसी गुनगुनी दशा में तो नहीं हैं?

किन्तु, आइये हम प्रभु का धन्यवाद करें! वह इस आशाहीन दशा से हमें बाहर निकालने का मार्ग दिखाता है। वह हमें प्रेम से प्रोत्साहन देता है कि हम बदल जायें और आंखों के लिए सुर्मा उस से प्राप्त करें। (प्रकाशितवाक्य 3:18)। यह परमेश्वर का वचन है जो पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे विवेक से बोलता है। इसे लगा लेने से शैतान की चालाकी भरे आक्रमणों से, पाप को पहचान कर इस से दूर रहने तथा सत्य का ज्ञान पाने और उसका पालन करने के लिए आत्मिक शक्ति प्राप्त होती है। जब हम बदल जायेंगे, परमेश्वर हमें एक बार फिर उपयोग करेगा और हम परमेश्वर के इस अंतिम कार्य में सामर्थी गवाह बन जायेंगे।

हम आशा करते हैं कि आप अपने जीवन को प्रभु के लिए पवित्र करेंगे, और अपने जीवन और शिक्षा के द्वारा, हमारे साथ मिलकर तीन स्वर्गदूतों का संदेश प्रचार करेंगे। पतित संसार के लिए यह चेतावनी देने और अनुग्रह का द्वार बंद हो जाने पर यीशु पुनः आ जायेगा और फिर किसी के पास कोई अवसर न रहेगा। अभी हमें पवित्र आत्मा की पुकार का हमारे दिल और दिमाग से सकारात्मक उत्तर देना होगा।

हमारी प्रार्थना है कि इस संदेश को पढ़ने वाले अधिकांश लोग इसे सौभाग्य समझ कर, तीन स्वर्गदूतों के संदेश को फैलाने में हमारे साथ एक जुट हो जायेंगे। फसल तैयार है किन्तु मजदूर थोड़े हैं, और परमेश्वर उनका उपयोग करेगा जो स्वयं को उसके लिए समर्पण करेंगे। प्रभु करे कि आप और मैं उन लोगों में पाये जायें!

This Pamphlet belongs to :
Christian Information Service
Bente and Abel Struksnes,
www.endtime.net

प्रभु यीशु मसीह के अनुपम नाम में सप्रेम अभिवादन!

भाई, बहनों, मसीह का दूसरा आगमन निकट है। इस भ्रष्ट संसार के दु:खों और आँसुओं से तो हमारा भी जी भर गया है अब तो एक ही इच्छा है कि प्रभु यीशु मसीह हमें लेने आ जाये जिससे उस स्वर्गीय घर में जाकर निवास करें जहाँ– ''मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी।''– प्रकाशितवाक्य 21:4

पहले स्वर्गदूत का संदेश, फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों की हर एक जाति, और कुल और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था। उसने बड़े शब्द से कहा, ''परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है, और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।'' आराधना सृष्टिकर्ता की करो, सृष्टि की नहीं। केवल चौथी आज्ञा ही आराधना और सृष्टिकर्ता की बात करती है और देखिये शैतान यही चाहता है कि हम चौथी आज्ञा को ही भूल जाये, जिसे स्वयं परमेश्वर ने स्मरण रखने की चेतावनी दी है।

दूसरे स्वर्गदूत का संदेश :– ''फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।

तीसरे स्वर्गदूत का संदेश :– ''फिर इनके बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से कहता हुआ आया, कि जो कोई इस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले, तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गयी है, पियेगा और पवित्र स्वर्गदूतो के सामने, और मेम्ने के सामने आग और गंधक की पीड़ा में पड़ेगा और उनकी पीड़ा का धुंआ युगानुयुग उठता रहेगा और जो उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करते हैं, और उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा। पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते है।''(प्रकतिशवाक्य 14:9–12)

प्रिय भाई, बहनों यदि आपको लगता है कि आप प्रभु से मिलने के लिये तैयार नहीं हैं तो यह संदेश आपके लिए ही है–

यदि आप ऐसी कलीसिया की तलाश में है जो परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सातवें दिन आराधना करती है और न केवल प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास ही करती है, परन्तु परमेश्वर की सभी दसों आज्ञाओं का पालन भी करती है तो आज ही हमें फोन करें, कि आपके क्षेत्र में ऐसी कलीसिया की जानकारी दी जा सके।

अब पिता परमेश्वर का प्रेम, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और पवित्र आत्मा की सहभागिता आप सब के साथ प्रभु के पुन: आगमन तक होती रहे। आमीन!!

शुभकामनाएं
बेन्टो और एबल स्ट्रउक्सनेस,
क्रिश्चियन इन्फॉर्मेशन सर्विस

हिन्दी अनुवाद
रीना बरकत मसीह
मो. नं0– 93092 06425
ई–मेल : globalendtime@gmail.com

अदृश्य संघर्ष

तीन स्वर्गीय संदेश जो उथल-पुथल और
भ्रम की दशा के बीच हमें आशा की
एक झलक दिखाते हैं...

''मनोहर संदेश! एक नई सोच खुलती है और पाठक अदृश्य संघर्ष को एक नये दृष्टिकोण से देख पाता है। यहां अनेक बातें बतायी गयी हैं जो मीडिया में नहीं मिलती..... इस पुस्तिका का हार्दिक अनुमोदन किया जाता है!'' –

रेग्गी राइट, वॉइस इन द विल्डर्नेस

Design by : Imagine Graphics, Bhopal, INDIA - 9893984804